CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2009 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. भाषा का एक प्रमुख गुण है — सृजनशीलता । हिन्दी में सृजनशीलता का अद्भुत गुण है, अद्भुत क्षमता है जिससे वह निरंतर प्रवहमान है । हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें समायोजन की पर्याप्त और जादुई शक्ति है । अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के शब्दों को हिन्दी जिस अधिकार और सहजता से जज़्ब करती है उससे हिन्दी की संभावनाएँ प्रशस्त होती हैं । हिन्दी के लचीलेपन ने अनेक भाषाओं के शब्दों को ही नहीं उनके सांस्कृतिक तेवरों को भी अपने में समेट लिया है । यही कारण है कि हिन्दी सामासिक संस्कृति की तथा विविध भाषा-भाषियों और धर्मावलंबियों की प्रमुख पहचान बन गई है । अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि के शब्द हिन्दी की शब्द-संपदा में ऐसे मिल गए हैं जैसे वे जन्म से ही इसी भाषा परिवार के सदस्य हों, यह समाहार उसकी जीवंतता का प्रमाण है । आज हम परहेज़ी होकर, शुद्धतावाद की जड़ मानसिकता में क़ैद होकर नहीं रह सकते । सूचना-क्रांति, तकनीकी-विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों के दबाव ने हमें सबसे संवाद के अवसर दिए हैं । विश्व-ग्राम की संकल्पना से हिन्दी को क़दम-ब-क़दम चलना होगा । इसके लिए आवश्यक है — आधुनिक प्रयोगों के अनुरूप विकास और भाषा और लिपि से सम्बन्धित यांत्रिक साधनों का विकास । इंटरनेट से लेकर बाज़ार तक, राजकाज से लेकर शिक्षा और न्याय के मंदिरों तक हिन्दी को उपयोगी और कार्यक्षम बनाने के लिए उसका सरल-सहज होना आवश्यक है और उसकी ध्वनि, लिपि, शब्द-वर्तनी, वाक्य-रचना का मानकीकृत होना भी ज़रूरी है । सरकार की तत्परता के साथ हम जनता की दृढ़ इच्छाशक्ति, सजगता और सचेष्टता को जोड़ दें तो वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय सरहदों में भारत की रहनुमाई करेगी ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

1(क). उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- गद्यांश में हिन्दी की सृजनशीलता, समायोजन और भविष्य की संभावनाएँ प्रमुख हैं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना लेखक हिन्दी की अन्य भाषाओं के शब्द अपनाने की क्षमता तथा आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसके विकास का वर्णन करता है। इसीलिए शीर्षक में हिन्दी की गतिशील प्रकृति और विकास दोनों आने चाहिए।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनना केवल तकनीकी विकास या शुद्धतावाद को शीर्षक बनाने से गद्यांश का एक ही पक्ष सामने आएगा। 'हिन्दी की सृजनशीलता और विकास की संभावनाएँ' पूरे कथ्य को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—'हिन्दी की सृजनशीलता और विकास की संभावनाएँ'।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय पहले पूरे गद्यांश का केंद्रीय विषय पहचानें, फिर संक्षिप्त पदबंध लिखें।

1(ख). हिन्दी की समायोजन-शक्ति से लेखक का क्या अभिप्राय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में समायोजन का अर्थ दूसरी भाषाओं के तत्वों को सहजता से अपनाना है।
- उत्तर में शब्दों के साथ सांस्कृतिक तत्वों के समावेश को भी स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: शक्ति का अर्थ स्पष्ट करना हिन्दी की समायोजन शक्ति से लेखक का अभिप्राय उसकी उस क्षमता से है, जिसके कारण वह अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के शब्दों को सहजता तथा अधिकार के साथ अपना लेती है। वे शब्द उसमें विदेशी या असंगत नहीं लगते, बल्कि उसके स्वाभाविक शब्दभंडार का अंग बन जाते हैं।

चरण 2: गद्यांश से पुष्टि करना गद्यांश में अरबी, फ़ारसी, तुर्की और अंग्रेज़ी के शब्दों का उदाहरण है। हिन्दी ने केवल इन भाषाओं के शब्द नहीं लिए, बल्कि उनके सांस्कृतिक तेवर भी अपने में समेटे हैं। इस लचीलेपन से उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता तथा विकास की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समायोजन शक्ति हिन्दी की दूसरी भाषाओं के शब्दों और सांस्कृतिक तत्वों को सहज रूप से आत्मसात करके अपना बनाने की क्षमता है।

त्वरित सुझाव: समायोजन की व्याख्या करते समय 'शब्दों' और 'सांस्कृतिक तेवरों' दोनों का उल्लेख करें।

1(ग). हिन्दी भारत की सामासिक संस्कृति की पहचान कैसे बन गई ? लेखक के कथन को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामासिक संस्कृति में अनेक भाषाओं, धर्मों और सांस्कृतिक परंपराओं का मेल होता है।
- गद्यांश हिन्दी के लचीलेपन को इस साझा पहचान का आधार बताता है।

चरण 1: विविध तत्वों का समावेश हिन्दी ने अपने लचीलेपन के कारण अनेक भाषाओं के शब्द और उनके सांस्कृतिक तेवर अपने में समेट लिए हैं। अरबी, फ़ारसी, तुर्की तथा अंग्रेज़ी के शब्द उसकी शब्दसंपदा में इतने सहज ढंग से मिल गए हैं कि वे उसी भाषा परिवार के मूल सदस्य लगते हैं।

चरण 2: साझी पहचान से संबंध भिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के इस मेल से हिन्दी किसी एक संकीर्ण समुदाय तक सीमित नहीं रहती। वह विविध भाषा बोलने वालों और अलग-अलग धर्म मानने वालों की साझा अभिव्यक्ति बन जाती है। इसी समावेशी स्वरूप के कारण लेखक ने उसे भारत की सामासिक संस्कृति की प्रमुख पहचान कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष अनेक भाषाओं के शब्दों और सांस्कृतिक तत्वों को अपनाकर हिन्दी विविध भाषा-भाषियों तथा धर्मावलंबियों की साझा पहचान और भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतीक बन गई है।

त्वरित सुझाव: सामासिक संस्कृति के उत्तर में विविधता के समावेश से साझा पहचान बनने का संबंध स्पष्ट करें।

1(घ). हिन्दी भाषा के संदर्भ में शुद्धतावादी होने का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ गद्यांश के प्रसंग के अनुसार स्पष्ट किया जाता है।
- लेखक शुद्धतावाद की जड़ मानसिकता को भाषा के विकास में बाधक मानता है।

चरण 1: शुद्धतावाद का अर्थ हिन्दी के संदर्भ में शुद्धतावादी होने का तात्पर्य भाषा की शुद्धता के आग्रह में अन्य भाषाओं के शब्दों तथा नए प्रयोगों से परहेज़ करना है। ऐसी सोच हिन्दी को एक बंद दायरे में रखती है और उसके स्वाभाविक समायोजन तथा लचीलेपन को स्वीकार नहीं करती।

चरण 2: लेखक का दृष्टिकोण लेखक के अनुसार आज सूचना-क्रांति, तकनीकी विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों ने सबके साथ संवाद के अवसर बढ़ाए हैं। इसलिए दूसरी भाषाओं से बचते रहने वाली जड़ मानसिकता उचित नहीं है। हिन्दी को समय की आवश्यकताओं के अनुसार नए शब्द और उपयोगी प्रयोग ग्रहण करते हुए विकसित होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्धतावादी होना हिन्दी की कथित शुद्धता बचाने के लिए अन्य भाषाओं के शब्दों और नए प्रयोगों को स्वीकार न करने की संकीर्ण, जड़ मानसिकता रखना है।

त्वरित सुझाव: यहाँ शुद्धतावाद को शुद्ध वर्तनी से न जोड़ें; प्रसंग अन्य भाषाओं के शब्द स्वीकार करने का है।

1(ङ). हिन्दी को सबसे संवाद स्थापित करने का अवसर कैसे मिला है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न संवाद के अवसर मिलने के कारण पूछता है।
- उत्तर गद्यांश में दी गई सूचना और तकनीक संबंधी बातों पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: कारण पहचानना गद्यांश में सूचना-क्रांति, तकनीकी विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों को सबके साथ संवाद के अवसर देने वाला बताया गया है। इन परिवर्तनों का उल्लेख सीधे प्रश्न का आधार है।

चरण 2: अवसर का आशय इन विकासों से व्यापक संपर्क और विचारों के आदान-प्रदान की संभावना बनी है। इसी संदर्भ में लेखक हिन्दी से विश्व-ग्राम की संकल्पना के साथ आगे बढ़ने की अपेक्षा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सूचना-क्रांति, तकनीकी विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण हिन्दी को सबसे संवाद स्थापित करने का अवसर मिला है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछने पर गद्यांश में दिए तीनों कारण साथ लिखें: सूचना, तकनीक और वैज्ञानिक आविष्कार।

1(च). सबके साथ क़दम मिलाकर चलने के लिए क्या आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विश्व-ग्राम के साथ चलने के लिए भाषा को आधुनिक प्रयोगों के अनुकूल बनाना आवश्यक है।
- भाषा और लिपि संबंधी यांत्रिक साधनों का विकास इस अनुकूलन का दूसरा आधार है।

चरण 1: आधुनिक प्रयोगों के अनुकूल विकास सबके साथ क़दम मिलाकर चलने के लिए हिन्दी का आधुनिक प्रयोगों और नई आवश्यकताओं के अनुरूप विकास आवश्यक है। उसे इंटरनेट, बाज़ार, राजकाज, शिक्षा तथा न्याय जैसे क्षेत्रों में उपयोगी और कार्यक्षम बनना होगा। यह विकास विश्व-ग्राम की संकल्पना के साथ चलने में सहायक होगा।

चरण 2: साधनों और मानकीकरण की आवश्यकता इसके लिए भाषा और लिपि से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास भी जरूरी है। हिन्दी सरल-सहज हो तथा उसकी ध्वनि, लिपि, शब्द-वर्तनी और वाक्य-रचना का मानकीकरण हो। इस प्रकार आधुनिक साधनों और व्यवस्थित भाषा-रूप का मेल हिन्दी के व्यापक उपयोग को संभव बनाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष आधुनिक प्रयोगों के अनुरूप हिन्दी का विकास तथा भाषा और लिपि से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास आवश्यक है। साथ ही उसकी सरलता और मानकीकरण भी जरूरी हैं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर के मुख्य दो आधार पहले लिखें: आधुनिक प्रयोगों के अनुरूप विकास और यांत्रिक साधनों का विकास।

1(छ). लेखक ने हिन्दी के किस गुण को उसकी जीवंतता का प्रमाण माना है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवंत भाषा नए शब्द और सांस्कृतिक प्रभाव ग्रहण करते हुए विकसित होती है।
- गद्यांश विदेशी भाषाओं के शब्दों के सहज समाहार को जीवंतता का प्रमाण मानता है।

चरण 1: गुण की पहचान लेखक ने हिन्दी की समायोजन शक्ति और अन्य भाषाओं के शब्दों के सहज समाहार को उसकी जीवंतता का प्रमाण माना है। हिन्दी में अरबी, फ़ारसी, तुर्की और अंग्रेज़ी के शब्द अधिकार तथा सहजता के साथ समा गए हैं। यह समावेश उसके

लचीलेपन और ग्रहणशीलता को प्रकट करता है।

चरण 2: कारण स्पष्ट करना इन भाषाओं के शब्द हिन्दी में बाहरी जोड़ जैसे नहीं लगते; वे ऐसे मिल गए हैं मानो जन्म से ही इसी भाषा परिवार के सदस्य हों। बदलती परिस्थितियों में नए शब्द स्वीकार करके हिन्दी अपनी शब्दसंपदा और अभिव्यक्ति की संभावनाएँ बढ़ाती है। उसका यही सक्रिय और विकासशील स्वरूप उसकी जीवंतता को सिद्ध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्य भाषाओं के शब्दों का सहज समाहार हिन्दी की जीवंतता का प्रमाण है, क्योंकि वे शब्द उसमें इतने स्वाभाविक रूप से घुल-मिल गए हैं मानो जन्म से उसी के सदस्य हों।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों अंश पूरे करें: पहले गुण बताएँ, फिर सहज समावेश के आधार पर उसका कारण समझाएँ।

1(ज). 'प्रमुख' और 'विविध' शब्दों के पर्यायवाची लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची शब्द समान या निकट अर्थ व्यक्त करते हैं।
- सही पर्याय चुनने के लिए गद्यांश में शब्द का अर्थ देखना चाहिए।

चरण 1: प्रमुख का पर्याय 'प्रमुख' का अर्थ मुख्य या प्रधान है। गद्यांश में भाषा का प्रमुख गुण कहने पर उसके मुख्य गुण की बात की गई है। इसलिए इसका उपयुक्त पर्याय 'मुख्य' है।

चरण 2: विविध का पर्याय 'विविध' अनेक प्रकार के या भिन्न-भिन्न होने का बोध कराता है। गद्यांश में विविध भाषा-भाषियों से अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोग अभिप्रेत हैं। इसलिए इसका उपयुक्त पर्याय 'विभिन्न' है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रमुख—मुख्य; विविध—विभिन्न।

त्वरित सुझाव: पर्याय लिखने से पहले दिए शब्द की जगह नया शब्द रखकर देखें कि वाक्य का अर्थ वही रहता है।

1(झ). 'जड़' तथा 'जन्म' शब्दों के विलोम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विलोम शब्द परस्पर विपरीत अर्थ व्यक्त करते हैं।
- अनेकार्थी शब्द का विलोम चुनते समय उसके प्रसंगगत अर्थ पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: जड़ का विलोम गद्यांश में 'जड़' मानसिकता का विशेषण है; यहाँ इसका अर्थ चेतनता और सक्रियता से रहित है। इस अर्थ में इसका प्रचलित विलोम 'चेतन' है। इसे पेड़ की जड़ वाले अर्थ में नहीं लेना चाहिए।

चरण 2: जन्म का विलोम 'जन्म' जीवन के आरंभ को व्यक्त करता है, जबकि 'मृत्यु' जीवन के अंत का बोध कराती है। दोनों परस्पर विपरीत अवस्थाएँ हैं, इसलिए जन्म का विलोम मृत्यु लिखा जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष जड़—चेतन; जन्म—मृत्यु।

त्वरित सुझाव: अनेकार्थी शब्द 'जड़' का विलोम प्रसंग देखकर चुनें; यहाँ 'जड़ मानसिकता' के लिए 'चेतन' उपयुक्त है।

1(ञ). 'समायोजन' और 'सहजता' शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाता है।
- प्रत्यय मूल शब्द के अंत में जुड़ता है और उससे नया शब्द बनता है।

चरण 1: समायोजन में उपसर्ग पहचानना समायोजन का विग्रह सम् + आयोजन है। यहाँ सम् शब्द के आरंभ में जुड़ा है, इसलिए यह उपसर्ग है। आयोजन के साथ जुड़कर यह मिलाने या व्यवस्थित रूप से साथ लाने का भाव देता है। केवल आरंभ के अक्षर अलग करना पर्याप्त नहीं; मूल शब्द भी सार्थक रहना चाहिए।

चरण 2: सहजता में प्रत्यय पहचानना सहजता का विग्रह सहज + ता है। यहाँ ता शब्द के अंत में जुड़कर सहज होने के भाव का बोध कराता है। सहज विशेषण है, जबकि सहजता उस गुण का नाम अर्थात भाववाचक संज्ञा है। इसलिए ता प्रत्यय है।

चरण 3: निष्कर्ष समायोजन = सम् + आयोजन; उपसर्ग सम् है। सहजता = सहज + ता; प्रत्यय ता है।

त्वरित सुझाव: पहले सार्थक मूल शब्द पहचानें; आरंभ का सम् उपसर्ग और अंत का ता प्रत्यय अलग लिखें।

---

2. चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी ।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है ।
बाहर दाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है ।
बाहर बहेलिए का डर है
यहाँ निर्द्वंद्व कंठ-स्वर है ।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू ज़ोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी ।
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

2(क). पिंजड़े के बाहर का संसार निर्मम कैसे है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में पिंजड़े के बाहर की कठिनाइयों को पद्यांश के संकेतों से स्पष्ट करना है।
- निर्ममता का संबंध भोजन, पानी और जीवन की असुरक्षा से है।

चरण 1: जीवन की आवश्यकताओं का संकट कविता में बाहर समुद्र, नदी और झरने होने पर भी पानी के लिए भटकने की बात है। वहाँ दाने का टोटा है। इस प्रकार विशाल संसार में भोजन और पानी की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं है तथा चिड़िया को इनके लिए संघर्ष करना पड़ता है।

चरण 2: प्राणों की असुरक्षा बाहर बहेलिए का डर है और चिड़िया के मारे जाने की आशंका बनी रहती है। उसे अपनेपन और सुरक्षा का आश्वासन भी नहीं मिलता। इन्हीं अभावों और खतरों के कारण बाहर की धरती को निर्मम कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पिंजड़े के बाहर चिड़िया को दाने-पानी के लिए भटकना पड़ता है और बहेलिए से प्राणों का खतरा रहता है; इसलिए वहाँ का संसार निर्मम है।

त्वरित सुझाव: निर्मम शब्द समझाते समय दाने का टोटा, पानी की तलाश और बहेलिए का भय साथ जोड़ें।

2(ख). पिंजड़े के भीतर चिड़िया को क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिंजड़े की सुविधाओं का उत्तर कविता में बताए गए आश्रय, भोजन, पानी और भय से मुक्ति पर आधारित है।
- पद्यांश में भीतर और बाहर की स्थितियों की तुलना करके सुविधाएँ दिखाई गई हैं।

चरण 1: भोजन और जल की उपलब्धता पिंजड़े के भीतर चिड़िया के लिए कटोरी में पानी भरा रहता है। उसे पानी खोजने के लिए भटकना नहीं पड़ता। वहाँ चुगने के लिए पर्याप्त दाना भी उपलब्ध है; कविता का यहाँ चुग्गा मोटा है कथन इसी सुविधा को बताता है।

चरण 2: सुरक्षा और निर्भय स्वर पिंजड़े में उसे बाहर के बहेलिए का भय नहीं सताता। यहाँ निर्द्वंद्व कंठ-स्वर होने का अर्थ है कि वह उस खतरे से निश्चिंत होकर स्वर निकाल सकती है। ये सुविधाएँ उसके शारीरिक निर्वाह और सुरक्षा से जुड़ी हैं, यद्यपि वे स्वतंत्रता का स्थान नहीं लेतीं।

चरण 3: निष्कर्ष पिंजड़े में चिड़िया को कटोरी में भरा पानी, पर्याप्त दाना और बहेलिए के भय से सुरक्षा मिलती है; वह निर्भय होकर गा सकती है।

त्वरित सुझाव: भीतर की सुविधाएँ गिनाते समय केवल कविता में दिए पानी, चुग्गे और भय से सुरक्षा का उल्लेख करें।

2(ग). कवि चिड़िया को स्वतंत्र जगत् की किन वास्तविकताओं से अवगत कराना चाहता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न स्वतंत्र संसार की वास्तविक कठिनाइयों को पहचानने की जाँच करता है।
- कवि के प्रस्तुत समझाने वाले स्वर और चिड़िया की मुक्ति की आकांक्षा में अंतर रखना चाहिए।

चरण 1: अभाव और संघर्ष की वास्तविकता कवि चिड़िया के सामने यह बात रखता है कि बाहर का संसार विशाल होते हुए भी निर्मम है। समुद्र, नदी और झरने होने पर भी पानी ढूँढ़ना पड़ेगा तथा दाने की कमी सहनी होगी। प्रकृति में संसाधन दिखाई देना और उनका आसानी से मिलना एक बात नहीं है।

चरण 2: भय और अपरिचय की वास्तविकता बाहर बहेलिए का डर तथा मारे जाने की आशंका है। वहाँ हवा में अपने जिस्म की गंध तक न मिलने का कथन अपनेपन के अभाव का संकेत देता है। इसलिए स्वतंत्र जगत में उसे अभाव, असुरक्षा और अपरिचित वातावरण का सामना करना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष कवि चिड़िया को स्वतंत्र जगत के दाने-पानी के अभाव, अपनेपन की कमी, बहेलिए के भय और प्राणों के संकट से

अवगत कराना चाहता है।

त्वरित सुझाव: वास्तविकताओं के उत्तर में संसाधनों का अभाव और जीवन का खतरा दोनों अवश्य बताएँ।

2(घ). बाहर सुखों का अभाव और प्राणों का संकट होने पर भी चिड़िया मुक्ति ही क्यों चाहती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चिड़िया के व्यवहार से स्वतंत्रता के प्रति उसकी स्वाभाविक चाह प्रकट होती है।
- बंदी जीवन की सुविधाओं और मुक्त जीवन के आत्मनिर्णय का अंतर उत्तर का आधार है।

चरण 1: सुविधाओं की सीमा समझना पिंजड़े में दाना-पानी और सुरक्षा मिलने पर भी चिड़िया बंधन में है। वह अपनी इच्छा से उड़ नहीं सकती। इसलिए ये सुविधाएँ उसके स्वाभाविक जीवन की पूर्ति नहीं करतीं और बंदी होने की पीड़ा को समाप्त नहीं कर पातीं।

चरण 2: मुक्ति की तीव्र इच्छा पहचानना चिड़िया मृत्यु की आशंका के बीच भी मुक्ति का गाना गाती है, बाहर निकलने के लिए अंग फैलाती है और पूरा जोर लगाती है। पिंजड़ा खुलने पर उसका उड़ जाना बताता है कि वह सुरक्षित पराधीनता से अधिक स्वतंत्र जीवन को महत्त्व देती है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वतंत्रता चिड़िया की स्वाभाविक और सबसे प्रबल चाह है। वह अपनी इच्छा से उड़ने के लिए अभाव और प्राणों का जोखिम उठाकर भी मुक्ति चाहती है।

त्वरित सुझाव: कारण को चिड़िया की स्वाभाविक स्वतंत्रता की चाह से जोड़ें और उसके बाहर निकलने के प्रयास का प्रमाण दें।

2(ङ). कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का संदेश उसकी मुख्य तुलना और अंतिम क्रिया से ग्रहण किया जाता है।
- दाने-पानी तथा सुरक्षा के बदले मिली कैद के प्रति चिड़िया का प्रतिरोध केंद्रीय भाव है।

चरण 1: सुविधा और स्वतंत्रता की तुलना पिंजड़े में पानी, दाना और बहेलिए से बचाव है, जबकि बाहर संघर्ष और खतरे हैं। फिर भी चिड़िया पिंजड़े में संतुष्ट नहीं होती। इस तुलना से स्पष्ट होता है कि केवल भौतिक सुख किसी जीव की स्वतंत्रता की आवश्यकता पूरी नहीं कर सकते।

चरण 2: अंतिम क्रिया से संदेश समझना चिड़िया मुक्ति का गीत गाती है, हर ओर जोर लगाती है और अवसर मिलते ही उड़ जाती है। उसका यह व्यवहार स्वतंत्रता की अदम्य आकांक्षा को व्यक्त करता है। कविता बंधन से निकलने के साहस और निरंतर प्रयत्न का महत्त्व बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि स्वतंत्रता जीवन का अमूल्य अधिकार है। सुविधापूर्ण पराधीनता की अपेक्षा संघर्षपूर्ण स्वतंत्रता अधिक प्रिय होती है; मुक्ति की चाह को दबाया नहीं जा सकता।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखते समय कथा दोहराने के बजाय चिड़िया के संघर्ष से स्वतंत्रता का व्यापक मूल्य निकालें।

3(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए :

भारत का भविष्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में प्रस्तावना, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार होना चाहिए।
- भारत के भविष्य पर विचार करते समय अवसरों के साथ चुनौतियों और नागरिक कर्तव्यों का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा बनाना प्रस्तावना में उज्ज्वल भविष्य की संभावना रखें। फिर शिक्षा, युवाशक्ति, विज्ञान, खेती और उद्योग की भूमिका समझाएँ। इसके बाद गरीबी, असमानता, भ्रष्टाचार और पर्यावरण की चुनौतियाँ उठाएँ। अंत में लोकतांत्रिक मूल्यों और जिम्मेदार नागरिकता पर बल देकर निबंध पूरा करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध भारत का भविष्य

भारत का भविष्य उसकी समृद्ध विरासत, वर्तमान प्रयासों और आने वाली पीढ़ियों के संकल्प से निर्मित होगा। हमारा देश अनेक भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों का घर है। यह विविधता हमारी शक्ति बन सकती है, यदि हम आपसी सम्मान तथा राष्ट्रीय एकता को अपने जीवन का आधार बनाएँ। उज्ज्वल भविष्य केवल एक सपना नहीं, बल्कि निरंतर परिश्रम और विवेक से प्राप्त किया जाने वाला लक्ष्य है।

युवाशक्ति भारत की बड़ी पूँजी है। युवाओं को अच्छी शिक्षा, उपयोगी कौशल और रोजगार के अवसर मिलें तो वे देश की प्रगति को नई दिशा दे सकते हैं। शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सीमित न हो। उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और स्वतंत्र चिंतन विकसित करना चाहिए। बालिकाओं तथा वंचित वर्गों को समान अवसर दिए बिना राष्ट्र की प्रतिभा का पूरा विकास संभव नहीं है।

विज्ञान और तकनीक से खेती, स्वास्थ्य, संचार तथा उद्योग में सुधार लाया जा सकता है। किंतु प्रगति का लाभ गाँवों और दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचना चाहिए। किसान को सिंचाई, उचित मूल्य और भंडारण की सुविधा मिले। छोटे उद्योगों तथा स्थानीय कारीगरों को प्रोत्साहन दिया जाए। इससे रोजगार बढ़ेगा और विकास कुछ महानगरों तक सीमित नहीं रहेगा।

भारत के सामने गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ भी हैं। भ्रष्टाचार योजनाओं का लाभ जरूरतमंद लोगों तक पहुँचने से रोकता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए पारदर्शी शासन, उत्तरदायी प्रशासन और जागरूक नागरिक आवश्यक हैं। जाति, धर्म या भाषा के नाम पर भेदभाव से बचकर ही हम लोकतंत्र को मजबूत बना सकते हैं।

प्रकृति की उपेक्षा करके प्राप्त समृद्धि स्थायी नहीं होगी। स्वच्छ जल, शुद्ध वायु और हरियाली आने वाली पीढ़ियों के अधिकार हैं। जल बचाना, प्रदूषण घटाना और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना विकास की अनिवार्य शर्तें हैं।

भारत का भविष्य सरकार के साथ प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। ईमानदार श्रम, अनुशासन, सहिष्णुता और सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सम्मान छोटे दिखाई देने वाले, किंतु महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। यदि हम अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी निभाएँ, तो भारत समृद्ध, न्यायपूर्ण और मानवीय राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ेगा।

चरण 3: निष्कर्ष भारत का उज्ज्वल भविष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समावेशी विकास, वैज्ञानिक दृष्टि, पर्यावरण संरक्षण और जिम्मेदार नागरिकता पर निर्भर है।

त्वरित सुझाव: निबंध में उपलब्धियों की सूची भर न दें; हर प्रमुख अवसर के साथ आवश्यक प्रयास और नागरिक दायित्व भी जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए :

महिलाओं को आरक्षण नहीं अधिकार चाहिए [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध का केंद्र स्त्रियों की गरिमा, समान अवसर और निर्णय लेने की स्वतंत्रता है।
- भूमिका, सामाजिक स्थिति, अधिकारों के उपाय और निष्कर्ष को क्रम से जोड़ने पर तर्कपूर्ण निबंध बनता है।

चरण 1: विषय का आशय स्पष्ट करें यहाँ अधिकार का अर्थ शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में समान भागीदारी

है। आरक्षण को अधिकारों का विरोधी बताने के बजाय यह स्पष्ट करना चाहिए कि केवल आरक्षित स्थान मिल जाना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक समानता के लिए सामाजिक व्यवहार और संस्थागत सुविधाओं में भी परिवर्तन चाहिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध महिलाओं को आरक्षण नहीं अधिकार चाहिए

किसी भी समाज की प्रगति का सही माप उसकी महिलाओं की स्थिति है। स्त्री केवल परिवार की देखभाल करने वाली सदस्य नहीं, स्वतंत्र व्यक्तित्व और देश की बराबर की नागरिक है। इसलिए उसकी उन्नति को कुछ आरक्षित स्थानों तक सीमित करना उचित नहीं। उसे सम्मानपूर्वक जीने और अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने का वास्तविक अधिकार मिलना चाहिए।

हमारे समाज में अनेक महिलाएँ शिक्षा, आर्थिक निर्भरता और रूढ़ियों के कारण पीछे रह जाती हैं। लड़के की पढ़ाई को निवेश और लड़की की पढ़ाई को बोझ मानने की सोच उसके अवसर छीन लेती है। घर और बाहर परिश्रम करने पर भी उसके योगदान को अक्सर कम आँका जाता है। असुरक्षित सार्वजनिक स्थान और कार्यस्थल भी उसकी स्वतंत्रता सीमित करते हैं।

इस स्थिति को बदलने के लिए लड़कियों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य पर समान ध्यान देना होगा। उन्हें संपत्ति संबंधी अधिकारों की जानकारी तथा रोजगार और उचित पारिश्रमिक के अवसर मिलने चाहिए। विवाह, व्यवसाय और सार्वजनिक जीवन के निर्णयों में उनकी इच्छा को महत्व दिया जाना चाहिए। घरेलू जिम्मेदारियाँ भी परिवार के सभी सदस्यों में बाँटी जाएँ, ताकि स्त्री को अपने विकास का समय मिल सके।

आरक्षण ऐतिहासिक वंचना कम करने और प्रतिनिधित्व बढ़ाने का एक सहायक उपाय हो सकता है। किंतु उसके साथ शिक्षा, सुरक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता न हो तो सशक्तीकरण अधूरा रहेगा। आवश्यकता ऐसे वातावरण की है जिसमें महिला किसी कृपा की पात्र नहीं, अधिकारसंपन्न नागरिक समझी जाए।

महिलाओं को वास्तविक अधिकार देना पूरे समाज को समृद्ध करना है। समानता का संकल्प तभी सार्थक होगा जब घर से कार्यस्थल तक उनके सम्मान, स्वतंत्रता और अवसरों की रक्षा होगी।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध का निष्कर्ष है कि प्रतिनिधित्व के साथ शिक्षा, सुरक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय का अधिकार महिलाओं के वास्तविक सशक्तीकरण के लिए आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में आरक्षण की चर्चा के बाद शिक्षा, सुरक्षा और आर्थिक अधिकारों के ठोस उपाय अवश्य जोड़ें।

3(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए :

वह अविस्मरणीय दिन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत अनुभव के निबंध में घटना का समय, स्थान, घटनाक्रम और मन पर पड़ा प्रभाव स्पष्ट होना चाहिए।
- सजीव वर्णन के साथ अंत में अनुभव से मिली सीख बताने पर घटना की अविस्मरणीयता प्रमाणित होती है।

चरण 1: घटना और क्रम चुनें इस विषय पर किसी एक दिन की घटना केंद्र में रखें। यहाँ विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता में पहली बार भाग लेने का कल्पित अनुभव लिया गया है। भूमिका में संकोच, मध्य में मंच का अनुभव और अंत में आत्मविश्वास का विकास आएगा। अंतिम उत्तर को घटनाओं की सूची बनाने के बजाय जुड़े हुए अनुच्छेदों में लिखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध वह अविस्मरणीय दिन

जीवन में कुछ दिन साधारण होते हुए भी हमारी सोच बदल देते हैं। मेरे लिए ऐसा ही दिन विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता का था। उस दिन मुझे कोई बड़ा पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन मैंने अपने भीतर छिपे डर पर विजय पाई। आज भी उस दिन को याद करते ही मन उत्साह से भर जाता है।

मैं कक्षा में उत्तर देने से भी संकोच करता था। एक दिन हिंदी की अध्यापिका ने प्रतियोगिता के लिए मेरा नाम सुझाया। पहले तो मैंने मना किया, किंतु उनके विश्वास ने मुझे तैयारी करने का साहस दिया। कई दिनों तक मैंने विषय पढ़ा, विचार लिखे और घर में अभ्यास किया। फिर भी प्रतियोगिता वाली सुबह मन में यही प्रश्न था कि इतने लोगों के सामने बोल पाऊँगा या नहीं।

विद्यालय का सभागार विद्यार्थियों से भरा था। मेरा नाम पुकारा गया तो पैर जैसे भारी हो गए। मंच पर पहुँचकर मैंने सामने देखा और कुछ क्षण चुप रह गया। तभी अध्यापिका की कही बात याद आई कि श्रोता भी हमारे जैसे ही लोग हैं। मैंने गहरी साँस ली और धीरे-धीरे बोलना आरंभ किया। कुछ वाक्यों के बाद डर कम होने लगा। अब मेरा ध्यान लोगों की निगाहों पर नहीं, अपने विचार स्पष्ट करने पर था।

भाषण समाप्त हुआ तो तालियाँ सुनकर विश्वास ही नहीं हुआ। परिणाम में मेरा नाम विजेताओं में नहीं था। पहले थोड़ा दुख हुआ, पर अध्यापिका ने कहा कि मंच पर सहज होकर बोल पाना भी बड़ी उपलब्धि है। मेरे साथियों ने भी प्रयास की सराहना की। घर लौटते समय मैं पुरस्कार के अभाव से अधिक अपने बदले हुए मन को अनुभव कर रहा था।

उस दिन मैंने सीखा कि साहस का अर्थ डर का न होना नहीं, डर के बावजूद आगे बढ़ना है। अब किसी नए काम से घबराता हूँ तो उसी मंच की याद करता हूँ। इसलिए वह दिन मेरे जीवन की अमूल्य स्मृति बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष यह दिन अविस्मरणीय है क्योंकि मंच पर बोलने के अनुभव ने संकोच को आत्मविश्वास में बदला और प्रयास करने का साहस दिया।

त्वरित सुझाव: एक ही घटना चुनें और अंत में स्पष्ट करें कि उस दिन ने आपके स्वभाव या दृष्टि में क्या परिवर्तन किया।

3(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए :

फ़ैशन के नए-नए रूप [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ैशन वस्त्र, केश-सज्जा, आभूषण और जीवन-शैली में बदलती रुचियों की अभिव्यक्ति है।
- संतुलित निबंध में नए रूपों के कारण, उपयोगिता, अंधानुकरण के दुष्परिणाम और विवेकपूर्ण चयन पर विचार होना चाहिए।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ भूमिका में फ़ैशन का अर्थ बताकर उसके बदलते रूपों का उल्लेख करें। फिर संचार माध्यमों और बाज़ार के प्रभाव को समझाएँ। इसके बाद सुंदरता, सुविधा और स्थानीय कारीगरी जैसे सकारात्मक पक्षों को अनावश्यक खर्च तथा दिखावे से जोड़कर संतुलित निष्कर्ष तक पहुँचें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध फ़ैशन के नए-नए रूप

मनुष्य केवल आवश्यकता के लिए ही वस्त्र नहीं पहनता, उनके माध्यम से अपनी रुचि और व्यक्तित्व भी व्यक्त करता है। पहनावे, केश-सज्जा, आभूषण और जीवन-शैली में प्रचलित नए ढंग को फ़ैशन कहा जाता है। समय के साथ समाज बदलता है, इसलिए फ़ैशन के रूप भी निरंतर बदलते रहते हैं।

कभी ढीले वस्त्र पसंद किए जाते हैं तो कभी चुस्त कपड़े लोकप्रिय हो जाते हैं। रंगों, कपड़ों के नमूनों, जूतों और बाल सँवारने के ढंग में भी नए प्रयोग होते हैं। भारतीय पहनावे में आधुनिक शैली का मेल दिखाई देता है। कभी पुरानी बुनाई या पारंपरिक आभूषण ही नए रूप में फिर लोकप्रिय हो जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि फ़ैशन केवल नवीन वस्तुओं का नाम नहीं, पुरानी वस्तुओं की नई प्रस्तुति भी है।

सिनेमा, विज्ञापन और संचार माध्यम लोगों की रुचि पर प्रभाव डालते हैं। प्रसिद्ध व्यक्तियों का पहनावा देखकर विशेषकर युवा उसे अपनाना चाहते हैं। बाज़ार भी लगातार नए उत्पाद प्रस्तुत करता है। परिणामस्वरूप जो वस्तु आज आकर्षक लगती है, वह कुछ समय बाद पुरानी समझी जाने लगती है।

फ़ैशन के सकारात्मक पक्ष भी हैं। उपयुक्त पहनावा आत्मविश्वास बढ़ाता है और कलात्मक प्रयोगों को प्रोत्साहन देता है। स्थानीय बुनकरों और कारीगरों की वस्तुएँ अपनाने से उनके काम को सम्मान मिलता है। किंतु बिना सोचे हर नया प्रचलन अपनाना ठीक नहीं। इससे अनावश्यक खर्च, वस्तुओं की बर्बादी और दूसरों से तुलना करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। सुविधा और स्वास्थ्य की उपेक्षा करके केवल दिखावे पर ध्यान देना भी अनुचित है।

वास्तविक सुंदरता सादगी, स्वच्छता और अवसर के अनुकूल पहनावे में है। फ़ैशन का चयन अपनी आवश्यकता, आर्थिक स्थिति और सुविधा को ध्यान में रखकर करना चाहिए। नई रुचियों का स्वागत करें, पर उनका अंधानुकरण न करें। विवेकपूर्ण चुनाव ही व्यक्तित्व को आकर्षक और स्वाभाविक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ैशन की नवीनता उपयोगी है जब उसका चयन सुविधा, आर्थिक सामर्थ्य और अपनी रुचि के अनुसार किया जाए;

अंधानुकरण से बचना चाहिए।

त्वरित सुझाव: फ़ैशन पर लिखते समय केवल वस्त्रों की सूची न दें; बदलती रुचि के कारण, लाभ और विवेकपूर्ण चयन भी समझाएँ।

4. कुछ टी.वी. चैनल अपराध-कथाओं और अंधविश्वासों पर विशेष बल देकर मीडिया के मूल कर्तव्य और ज़िम्मेदारी से पलायन कर रहे हैं । इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए एक पत्र किसी दैनिक पत्र के संपादक को लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा पत्र किसी सार्वजनिक समस्या पर जनमत बनाने और सुधार सुझाने का माध्यम है।
- पत्र में विषय, स्पष्ट तर्क, विनम्र निवेदन और औपचारिक समापन होना चाहिए।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर संपादक को संबोधित करेंगे। विषय में अपराध तथा अंधविश्वास केंद्रित प्रसारण पर चिंता व्यक्त करेंगे। मुख्य भाग में ऐसे कार्यक्रमों के दुष्परिणाम और मीडिया के उत्तरदायित्व बताएँगे। अंत में संतुलित, उपयोगी और तथ्यपरक प्रसारण का आग्रह करेंगे।

चरण 2: विचारों का क्रम अपराध की सूचना देना आवश्यक है, किंतु उसका उत्तेजक नाट्य रूपांतरण दर्शकों में भय और अनुकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार अंधविश्वास को सत्य की तरह प्रस्तुत करना वैज्ञानिक दृष्टि को कमजोर करता है। इसलिए सूचना की पुष्टि, सामाजिक सरोकार और दर्शकों की समझ बढ़ाना पत्र के मुख्य बिंदु होंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 जुलाई, 2009
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी, नई दिल्ली।
विषय : टी.वी. चैनलों के गैरजिम्मेदार प्रसारण के संबंध में।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं कुछ टी.वी. चैनलों के बढ़ते गैरजिम्मेदार प्रसारण की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आज कई चैनल दर्शक संख्या बढ़ाने के लिए अपराध-कथाओं और अंधविश्वासों को विशेष महत्त्व दे रहे हैं। अपराध की सूचना देने के बजाय उसका सनसनीखेज चित्रण किया जाता है। इससे समाज में भय फैलता है और बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार चमत्कारों और निराधार मान्यताओं को प्रमाणित सत्य की तरह प्रस्तुत करना वैज्ञानिक चेतना के विरुद्ध है। मीडिया का कर्तव्य जनता को विश्वसनीय सूचना देना, जागरूक बनाना और समाज की वास्तविक समस्याओं को सामने लाना है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और जनहित के मुद्दों की उपेक्षा करके वह अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता।

कृपया इस विषय पर विचारपूर्ण सामग्री प्रकाशित करें। चैनलों को तथ्य जाँचने, संतुलित प्रस्तुति अपनाने और जनहित के कार्यक्रम बढ़ाने चाहिए। संबंधित संस्थाओं को भी प्रसारण के उत्तरदायित्व पर ध्यान देना चाहिए।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में अपराध एवं अंधविश्वास के सनसनीखेज प्रसारण की आलोचना करते हुए तथ्यपरक, जागरूकतापरक और जनहितकारी मीडिया की माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय समस्या के साथ उसके प्रभाव और व्यावहारिक सुधार भी स्पष्ट लिखिए।

अथवा

4. बाढ़ उतर जाने के बाद बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में राहत-कार्य असंतोषजनक है । भोजन और चिकित्सा की भी समुचित व्यवस्था नहीं है । क्षेत्र के संसद्-सदस्य को पत्र लिखकर वस्तु-स्थिति से अवगत कराइए और तुरंत हस्तक्षेप करने का अनुरोध कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनप्रतिनिधि को लिखा शिकायत-पत्र स्थानीय समस्या, उसकी गंभीरता और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट करता है।
- भाषा तथ्यपरक, सम्मानपूर्ण और आग्रहपूर्ण हो; राहत की माँग ठोस उपायों के साथ रखी जाए।

चरण 1: प्रारूप और विषय चुनना प्रेषक का पता, दिनांक और सांसद का पदनाम लिखेंगे। विषय में बाढ़ के बाद राहत की अपर्याप्त व्यवस्था पर तुरंत हस्तक्षेप का अनुरोध करेंगे। संबोधन के बाद भोजन, पेयजल, सफाई और चिकित्सा की स्थिति बताएँगे तथा अंत में आवश्यक कार्रवाई का आग्रह करेंगे।

चरण 2: माँगों की योजना बाढ़ उतरने के बाद भी प्रभावित परिवारों को जीवन की आवश्यक सुविधाएँ चाहिए। पत्र में केवल शिकायत करने के स्थान पर राशन वितरण, चिकित्सा शिविर, सुरक्षित पेयजल, दवाइयों और सफाई की व्यवस्था माँगी जाएगी। सांसद से प्रशासन के साथ समन्वय और राहत की निगरानी का अनुरोध भी उचित होगा।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र ग्राम रामपुर, जिला पटना
बिहार
20 अगस्त, 2009
सेवा में,
माननीय सांसद महोदय,
पटना संसदीय क्षेत्र, बिहार।
विषय : बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में राहत-कार्य हेतु तत्काल हस्तक्षेप का अनुरोध।
महोदय,
मैं आपके संसदीय क्षेत्र के रामपुर गाँव का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में बाढ़ का पानी उतर गया है, लेकिन प्रभावित परिवारों की कठिनाइयाँ समाप्त नहीं हुई हैं। अनेक घर क्षतिग्रस्त हैं और लोग अस्थायी स्थानों पर रह रहे हैं। राहत-कार्य की गति बहुत धीमी है तथा सहायता सभी जरूरतमंद परिवारों तक नहीं पहुँच रही है।

भोजन की समुचित व्यवस्था न होने से बच्चों, वृद्धों और महिलाओं को विशेष कठिनाई हो रही है। सुरक्षित पेयजल की कमी और जगह-जगह जमा गंदगी से बीमारियाँ फैलने की आशंका है। चिकित्सा-सुविधाएँ भी अपर्याप्त हैं। बीमार लोगों को समय पर जाँच और आवश्यक दवाइयाँ नहीं मिल पा रही हैं।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि तत्काल क्षेत्र का दौरा करें और जिला प्रशासन को प्रभावी राहत-कार्य के निर्देश दिलाएँ। नियमित भोजन वितरण, पर्याप्त राशन, स्वच्छ पेयजल, अस्थायी आश्रय तथा चिकित्सा शिविरों की व्यवस्था कराई जाए। सफाई, जलनिकासी और रोगों की रोकथाम के उपाय भी शीघ्र हों। राहत-सामग्री के निष्पक्ष वितरण की निगरानी से पीड़ितों को वास्तविक सहायता मिलेगी।

हमें आशा है कि आपके हस्तक्षेप से राहत-कार्य में तेजी आएगी।
धन्यवाद।
भवदीय,
राजेश कुमार
रामपुर के निवासियों की ओर से

चरण 4: निष्कर्ष सांसद से बाढ़ के बाद अपर्याप्त राहत, भोजन और चिकित्सा की स्थिति सुधारने तथा प्रशासन से तत्काल समन्वय करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र में समस्या का स्थान, पीड़ितों की कठिनाई और माँगी गई कार्रवाई अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

5(क)(i). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

इलेक्ट्रॉनिक-माध्यम प्रिंट-माध्यम की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय क्यों है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार माध्यम की लोकप्रियता उसकी पहुँच, गति और सहजता पर निर्भर करती है।
- श्रव्य तथा दृश्य प्रस्तुति सूचना को रोचक और आसानी से समझने योग्य बनाती है।

चरण 1: माध्यम की विशेषता पहचानना रेडियो तथा टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम सूचना को आवाज और टेलीविजन के मामले में चित्रों सहित प्रस्तुत करते हैं। घटनाओं का तत्काल या सीधा प्रसारण भी संभव है।

चरण 2: प्रिंट माध्यम से तुलना मुद्रित सामग्री समझने के लिए पढ़ना आना आवश्यक है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से निरक्षर व्यक्ति भी सुनकर या देखकर जानकारी पा सकता है। इसलिए इसकी पहुँच व्यापक और प्रस्तुति अधिक आकर्षक होती है।

चरण 3: निष्कर्ष इलेक्ट्रॉनिक माध्यम अपनी तात्कालिकता, रोचक श्रव्य-दृश्य प्रस्तुति और निरक्षर लोगों तक भी पहुँच के कारण प्रिंट माध्यम से अधिक लोकप्रिय है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय गति, श्रव्य-दृश्य आकर्षण और साक्षरता की बाधा न होना अवश्य जोड़िए।

5(क)(ii). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

हिन्दी के किन्हीं दो राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र मुद्रित जनसंचार का प्रमुख माध्यम हैं।
- प्रश्न में हिंदी के दो राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम माँगे गए हैं।

चरण 1: माँगी गई श्रेणी पहचानना उत्तर में हिंदी दैनिक समाचार-पत्रों के नाम देने हैं। पत्रिका, समाचार चैनल अथवा अंग्रेजी समाचार-पत्र का नाम देना इस प्रश्न के अनुरूप नहीं होगा।

चरण 2: दो उपयुक्त नाम चुनना दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर हिंदी के व्यापक प्रसार वाले समाचार-पत्र हैं। इनके नाम सीधे और अलग-अलग लिखने से अपेक्षित दो उदाहरण स्पष्ट हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी के दो राष्ट्रीय समाचार-पत्र हैं : दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर।

त्वरित सुझाव: नाम लिखते समय समाचार-पत्र और समाचार चैनल का अंतर ध्यान रखें; केवल दो स्पष्ट नाम पर्याप्त हैं।

5(क)(iii). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

पीत पत्रकारिता का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में समाचारों की सत्यता, निष्पक्षता और जनहित का महत्त्व है।
- सनसनी और अनुचित लाभ के लिए इन मूल्यों की उपेक्षा पीत पत्रकारिता कहलाती है।

चरण 1: प्रवृत्ति स्पष्ट करना जब कोई समाचार-माध्यम पाठकों या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए उत्तेजक शीर्षक, अपुष्ट खबरें और

बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत तथ्य इस्तेमाल करता है, तब सत्य की जगह सनसनी को प्राथमिकता मिलती है।

चरण 2: उद्देश्य और दोष बताना ऐसी पत्रकारिता का उद्देश्य प्रसार, दर्शक संख्या या व्यावसायिक लाभ बढ़ाना होता है। अफवाह, चरित्र-हनन और भ्रामक प्रस्तुति इसके रूप हो सकते हैं। यह जिम्मेदार और तथ्यपरक पत्रकारिता के विरुद्ध है।

चरण 3: निष्कर्ष पीत पत्रकारिता वह अनैतिक पत्रकारिता है जिसमें लोकप्रियता या लाभ के लिए सनसनीखेज, अपुष्ट अथवा भ्रामक खबरें प्रकाशित या प्रसारित की जाती हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनी, तथ्यहीनता और लोकप्रियता या लाभ का उद्देश्य जोड़कर आशय स्पष्ट कीजिए।

5(क)(iv). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

'इंट्रो' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आरंभ पाठक को घटना का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष बताता है।
- उलटा पिरामिड शैली में सबसे आवश्यक सूचना पहले आती है।

चरण 1: अर्थ समझना इंट्रो अंग्रेज़ी शब्द इंट्रोडक्शन का संक्षिप्त रूप है। समाचार के पहले अनुच्छेद को इंट्रो, आमुख या मुखड़ा कहते हैं। इसमें घटना के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य संक्षेप में दिए जाते हैं।

चरण 2: कार्य स्पष्ट करना इंट्रो पाठक की जिज्ञासा जगाता है और उसे आगे समाचार पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसमें समाचार के अनुसार क्या, कौन, कहाँ और कब जैसे आवश्यक प्रश्नों का उत्तर प्रमुखता से दिया जाता है; सभी विवरण आरंभ में भर देना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार के आरंभिक अनुच्छेद में उसकी प्रमुख सूचना का संक्षिप्त और आकर्षक परिचय ही इंट्रो कहलाता है।

त्वरित सुझाव: इंट्रो की परिभाषा लिखते समय पहले अनुच्छेद और प्रमुख सूचना, इन दोनों बातों को अवश्य जोड़ें।

5(क)(v). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

'फ़्लैश' किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में तात्कालिकता का विशेष महत्त्व है।
- बड़ी घटना की शुरुआती सूचना कम शब्दों में तुरंत प्रसारित की जाती है।

चरण 1: परिभाषा देना किसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना की तत्काल दी जाने वाली संक्षिप्त समाचार-सूचना को फ़्लैश कहते हैं। टेलीविजन पर यह नियमित कार्यक्रम के बीच अथवा पर्दे पर लिखित पट्टी के रूप में दिखाई जा सकती है।

चरण 2: विशेषता पहचानना फ़्लैश में घटना का मुख्य तथ्य होता है, पूरा विस्तृत समाचार नहीं। इसका उद्देश्य दर्शक को नई और महत्त्वपूर्ण घटना से तुरंत अवगत कराना है। अधिक जानकारी मिलने पर उसी घटना का विस्तृत समाचार दिया जाता है। इसलिए इसकी भाषा छोटी, स्पष्ट और सीधी रखी जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़्लैश किसी बड़ी घटना की तुरंत प्रसारित होने वाली अत्यंत संक्षिप्त समाचार-सूचना है।

त्वरित सुझाव: फ़्लैश को विस्तृत समाचार न कहें; उसकी तत्कालता और संक्षिप्तता को परिभाषा में प्रमुख रखें।

5(ख). 'देश में महँगी होती व्यावसायिक शिक्षा' विषय पर रिपोर्ट तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट किसी स्थिति का तथ्यपरक, व्यवस्थित और स्पष्ट विवरण प्रस्तुत करती है।
- विषय की समस्या, उसके कारण, प्रभाव और सुधार के उपाय रिपोर्ट की सामग्री बन सकते हैं।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना रिपोर्ट में शीर्षक, संवाददाता, स्थान और तिथि देकर स्थिति का परिचय लिखा जाएगा। आगे बढ़ती फीस के कारण, विद्यार्थियों पर प्रभाव और सुधार के उपाय आएँगे। अप्रमाणित आँकड़ों या काल्पनिक सर्वेक्षण को वास्तविक तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना रिपोर्ट देश में महँगी होती व्यावसायिक शिक्षा

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली, 15 मार्च 2009।

व्यावसायिक शिक्षा का बढ़ता खर्च साधारण परिवारों के विद्यार्थियों के लिए चिंता का विषय बन गया है। इंजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रबंधन जैसे पाठ्यक्रमों में प्रवेश मिलने के बाद भी फीस तथा अन्य खर्च जुटाना अनेक परिवारों के लिए कठिन होता है।

केवल शिक्षण शुल्क ही समस्या नहीं है। छात्रावास, भोजन, पुस्तकें, उपकरण और आवागमन के खर्च मिलकर पढ़ाई का कुल व्यय बढ़ाते हैं। निजी संस्थानों पर बढ़ती निर्भरता और पर्याप्त सस्ती सार्वजनिक सीटों का अभाव इस स्थिति को और गंभीर बनाते हैं।

इसका सबसे अधिक प्रभाव निम्न और मध्यम आय वाले परिवारों पर पड़ता है। प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी रुचि के पाठ्यक्रम से पीछे हट सकते हैं। कुछ परिवार कर्ज लेकर पढ़ाई का खर्च उठाते हैं, जिससे विद्यार्थी पर जल्दी नौकरी पाने और ऋण चुकाने का दबाव बढ़ता है। शिक्षा की उपलब्धता में आर्थिक असमानता बढ़ना भी चिंता का विषय है।

स्थिति सुधारने के लिए सार्वजनिक व्यावसायिक संस्थानों का विस्तार, फीस में पारदर्शिता और जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त छात्रवृत्ति आवश्यक है। शिक्षा ऋण की शर्तें सरल हों और संस्थानों की गुणवत्ता तथा शुल्क पर प्रभावी निगरानी रखी जाए। व्यावसायिक शिक्षा तभी अपना उद्देश्य पूरा करेगी जब योग्यता रखने वाला विद्यार्थी आर्थिक अभाव के कारण उससे वंचित न रहे।

चरण 3: निष्कर्ष व्यावसायिक शिक्षा की बढ़ती लागत अवसरों की समानता को प्रभावित करती है। रिपोर्ट में समस्या, उसके कारण, प्रभाव और व्यावहारिक उपाय क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट में शीर्षक, स्थान और तिथि अवश्य दें; बिना स्रोत के आँकड़े गढ़ने के बजाय स्थिति का संयत विवरण लिखें।

अथवा

5(ख). 'भारतीय चंद्रयान : एक बड़ी उपलब्धि' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का परिचय, तर्कपूर्ण विवेचन और सार्थक निष्कर्ष होता है।
- वैज्ञानिक उपलब्धि पर लिखते समय मिशन के उद्देश्य और महत्त्व को सही तथ्यों के साथ समझाना चाहिए।

चरण 1: विषय और रूपरेखा भारतीय चंद्रयान के विषय को इस प्रश्न के समय के चंद्रयान-1 अभियान के संदर्भ में लिया जाएगा। आलेख में शीर्षक और लेखक का नाम देकर प्रक्षेपण, वैज्ञानिक उद्देश्य, राष्ट्रीय महत्त्व और आगे की संभावनाएँ स्पष्ट की जाएँगी। बाद के अभियानों को इस अभियान की उपलब्धि नहीं बताया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख भारतीय चंद्रयान : एक बड़ी उपलब्धि

लेखक : एक विद्यार्थी

भारत का पहला चंद्र अभियान चंद्रयान-1 देश की वैज्ञानिक यात्रा का गौरवपूर्ण पड़ाव है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 22

अक्टूबर 2008 को श्रीहरिकोटा से इसका सफल प्रक्षेपण किया। इस अभियान ने सिद्ध किया कि भारत जटिल अंतरिक्ष अभियानों की योजना बनाकर उन्हें सफलतापूर्वक संचालित करने की क्षमता रखता है।

चंद्रयान-1 का उद्देश्य चंद्रमा की सतह का अध्ययन, उसके मानचित्र तैयार करना तथा खनिजों और रासायनिक तत्वों के वितरण की जानकारी प्राप्त करना था। यह केवल चंद्रमा तक पहुँचने की प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञान के विस्तार का प्रयास था। विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से प्राप्त जानकारी चंद्रमा को समझने में उपयोगी होनी थी।

इस उपलब्धि के पीछे वैज्ञानिकों, अभियंताओं और तकनीकी कर्मचारियों का सामूहिक परिश्रम था। स्वदेशी तकनीकी क्षमता के विकास के साथ अभियान ने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग की संभावनाओं को भी मजबूत किया। इससे विश्व में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रतिष्ठा बढ़ी और युवा पीढ़ी को विज्ञान तथा अनुसंधान की ओर प्रेरणा मिली।

अंतरिक्ष अनुसंधान के लाभ दूरगामी होते हैं। ऐसे अभियानों में विकसित तकनीक, सटीक योजना और प्रशिक्षित मानव संसाधन देश की व्यापक वैज्ञानिक प्रगति में योगदान देते हैं। साथ ही, यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक सफलता का उत्सव मनाते समय शिक्षा और अनुसंधान के लिए निरंतर सहयोग भी सुनिश्चित किया जाए।

चंद्रयान-1 भारत के आत्मविश्वास, वैज्ञानिक दृष्टि और परिश्रम का प्रतीक है। यह उपलब्धि भविष्य के अधिक चुनौतीपूर्ण अभियानों की आधारशिला बनकर देश को नई ऊँचाइयों की ओर प्रेरित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष चंद्रयान-1 ने चंद्र अन्वेषण में भारत की क्षमता स्थापित की और देश की वैज्ञानिक प्रगति को नई दिशा दी। आलेख इस उपलब्धि को उसके उद्देश्यों और व्यापक महत्त्व के साथ प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: इस पुराने प्रश्न में चंद्रयान-1 पर केंद्रित रहें; प्रक्षेपण, वैज्ञानिक उद्देश्य और राष्ट्रीय महत्त्व को अलग अनुच्छेद दें।

---

6. 'वरिष्ठ नागरिकों के प्रति हमारा नज़रिया' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय का मानवीय, रोचक और विचारपूर्ण प्रस्तुतीकरण है। इसमें अनुभव, संवेदना और तथ्यपूर्ण विवेचन का संतुलन रखा जाता है।
- विषय का केंद्र वरिष्ठ नागरिकों की गरिमा, उनकी आवश्यकताएँ और परिवार तथा समाज का व्यवहार है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम से शुरुआत करें। किसी परिचित दृश्य से विषय खोलें, फिर उपेक्षा के कारण, बुज़ुर्गों के योगदान और व्यवहार में आवश्यक बदलाव प्रस्तुत करें। भाषा आत्मीय हो तथा निष्कर्ष में व्यावहारिक संदेश दिया जाए।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श फ़ीचर बुज़ुर्ग: हमारे घर की जीवित धरोहर

लेखक: एक विद्यार्थी

शाम ढल रही है। पार्क की बेंच पर बैठे एक बुज़ुर्ग बार-बार घर की ओर देखते हैं। घर में सब हैं, पर उनकी बात सुनने के लिए शायद किसी के पास समय नहीं। यह दृश्य हमें अपने समाज के एक असहज प्रश्न के सामने खड़ा करता है: जिन हाथों ने हमारा बचपन सँवारा, उनके बुढ़ापे के प्रति हमारा नज़रिया कैसा है?

वरिष्ठ नागरिकों को केवल असहाय और दूसरों पर निर्भर मान लेना अनुचित है। उनके पास अनुभव, कौशल और जीवन की कठिनाइयों से सीखी हुई समझ है। परिवार की स्मृतियाँ, लोककथाएँ और जीवन-मूल्य अक्सर उन्हीं के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुँचते हैं। उनकी सलाह हमारी कई समस्याएँ सुलझा सकती है।

फिर भी तेज़ रफ़्तार जीवन में उनकी धीमी चाल और पुरानी आदतें कभी-कभी हमें बोझ लगने लगती हैं। अकेलापन, स्वास्थ्य की चिंता और आर्थिक असुरक्षा उनकी परेशानी बढ़ाते हैं। केवल भोजन और दवा उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं; उन्हें संवाद, स्नेह और निर्णयों में भागीदारी भी चाहिए।

बदलाव घर से शुरू हो सकता है। हम प्रतिदिन कुछ समय उनके साथ बैठें, उनकी बात धैर्य से सुनें और उनकी पसंद का सम्मान करें। डिजिटल सेवाओं के उपयोग में सहायता दें, पर उनकी स्वायत्तता न छीनें। सार्वजनिक स्थानों पर सुगम आवागमन, स्वास्थ्य सुविधाएँ और

सम्मानजनक व्यवहार भी आवश्यक हैं।

वरिष्ठ नागरिक दया के पात्र नहीं, हमारे बराबर सम्मान के अधिकारी हैं। आज हम उनके लिए जैसा समाज बनाएँगे, कल वही समाज हमारे अपने बुढ़ापे का सहारा बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर का संदेश है कि वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव का सम्मान करते हुए उन्हें समय, सहभागिता, सुविधा और आत्मसम्मान दिया जाए।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत जीवंत दृश्य से करें और अंत में पाठक को अपने व्यवहार पर विचार करने का अवसर दें।

अथवा

6. 'यातायात पुलिस की अपनी समस्याएँ' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर का उद्देश्य किसी विषय के मानवीय पक्ष को रोचक भाषा में सामने लाना है; केवल सूचनाएँ गिनाना पर्याप्त नहीं है।
- इस विषय में यातायात पुलिस की कार्यस्थितियों, नागरिक व्यवहार और सुधार के उपायों को परस्पर जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक और लेखक का नाम दें। चौराहे का जीवंत दृश्य लिखकर गर्मी, प्रदूषण, लंबी ड्यूटी और नियम तोड़ने वालों से उत्पन्न कठिनाइयाँ समझाएँ। अंत में प्रशासन और नागरिकों की साझा जिम्मेदारी स्पष्ट करें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श फ़ीचर चौराहे पर खड़ा प्रहरी

लेखक: एक विद्यार्थी

दोपहर की तपती धूप है। सड़क पर वाहनों की लंबी कतार लगी है। हम कार का शीशा चढ़ाकर गर्मी से बच जाते हैं, पर चौराहे के बीच खड़ा यातायात पुलिसकर्मी लगातार हाथ के संकेतों से भीड़ सँभाल रहा है। हमारे लिए वह केवल सीटी बजाने वाला चेहरा है; उसके पीछे की कठिन दिनचर्या पर हमारा ध्यान कम जाता है।

धूल, धुआँ और लगातार बजते हॉर्न उसके रोज़ के साथी हैं। गर्मी, बरसात और सर्दी में खुले स्थान पर घंटों खड़े रहना थका देता है। पीने के पानी, विश्राम और शौचालय जैसी सुविधाओं तक समय पर पहुँचना भी हर जगह आसान नहीं होता। प्रदूषण और शोर स्वास्थ्य पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं।

सड़क पर समस्या केवल वाहनों की संख्या नहीं है। गलत दिशा में चलते वाहन, अवैध पार्किंग और लाल बत्ती पार करने की जल्दबाज़ी व्यवस्था बिगाड़ते हैं। नियम लागू करने पर कुछ लोग बहस या दुर्व्यवहार करने लगते हैं। दुर्घटना होने पर घायलों की सहायता और भीड़ को नियंत्रित करने का भार भी पुलिस पर आता है।

व्यवस्था में सुधार के लिए पर्याप्त कर्मचारी, नियमित विश्राम, स्वच्छ पानी, मौसम से बचाव और स्वास्थ्य जाँच जैसी सुविधाएँ आवश्यक हैं। सुचारु संकेत व्यवस्था और उचित सड़क प्रबंधन से उनका काम आसान हो सकता है। शिकायतों की निष्पक्ष जाँच तथा जवाबदेही भी विश्वास बढ़ाती है।

नागरिकों की जिम्मेदारी उतनी ही स्पष्ट है: नियम मानें, रास्ता न रोकें और ड्यूटी कर रहे कर्मचारी से सम्मान से बात करें। यातायात अनुशासन केवल चालान के डर से नहीं आता। चौराहे का प्रहरी तभी सफल होगा, जब सड़क पर चलने वाला हर व्यक्ति उसका सहयोगी बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर यातायात पुलिस की कठिन कार्यस्थितियों को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करता है और सुविधाओं, जवाबदेही तथा नागरिक सहयोग की आवश्यकता बताता है।

त्वरित सुझाव: समस्याओं के साथ उनका कारण और व्यावहारिक उपाय जोड़ें; फ़ीचर को नारे या आरोपों की सूची न बनने दें।

7. बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं । नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥
अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥
सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी । सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥
निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). इन पंक्तियों में किसका प्रलाप है ? वह इतना शोकग्रस्त क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में लक्ष्मण की मूर्च्छा देखकर राम का भ्रातृप्रेम और व्याकुलता प्रकट होती है।
- काव्यांश में सुमित्रा के विश्वास और लक्ष्मण के प्रति उत्तरदायित्व की चिंता राम के शोक को और गहरा करती है।

चरण 1: प्रलाप करने वाले की पहचान इन पंक्तियों में श्रीराम का प्रलाप है। वे अपने भाई लक्ष्मण को संबोधित कर रहे हैं। 'उठि किन मोहि सिखावहु भाई' में राम उनसे उठकर बोलने की विनती करते हैं; इससे उनकी असहाय और शोकाकुल मनःस्थिति स्पष्ट होती है।

चरण 2: शोक का कारण युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर राम को उनके प्राणों की चिंता हो रही है। प्रिय भाई के संभावित वियोग का दुःख उन्हें व्याकुल कर देता है। साथ ही वे सोचते हैं कि लक्ष्मण को उनके संरक्षण में भेजने वाली माता सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे। लक्ष्मण अपनी माता के प्राणाधार हैं, इसलिए उनकी दशा राम के लिए व्यक्तिगत दुःख के साथ उत्तरदायित्व की पीड़ा भी बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह श्रीराम का प्रलाप है। लक्ष्मण की मूर्च्छा, उनके प्राणों की चिंता और सुमित्रा को उत्तर देने की आशंका के कारण वे अत्यंत शोकग्रस्त हैं।

त्वरित सुझाव: वक्ता की पहचान के बाद शोक के दो जुड़े पक्ष लिखें: भाई के वियोग का भय और माता सुमित्रा के प्रति उत्तरदायित्व।

7(ख). किसने किस विश्वास के आधार पर लक्ष्मण को राम के साथ भेजा था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार 'सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी' और 'सब बिधि सुखद परम हित जानी' पंक्तियाँ हैं।
- इन पंक्तियों में माता का विश्वास, राम का संरक्षण और लक्ष्मण के हित की भावना मुख्य हैं।

चरण 1: भेजने वाले की पहचान लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने उन्हें राम के साथ भेजा था। राम लक्ष्मण से कहते हैं कि तुम्हारी माता ने तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें मुझे सौंपा था। यहाँ हाथ सौंपने का उल्लेख माता द्वारा अपने पुत्र के संरक्षण का दायित्व राम को देने का भाव प्रकट करता है।

चरण 2: विश्वास का आधार सुमित्रा राम को लक्ष्मण का परम हितैषी मानती थीं। उन्हें विश्वास था कि राम हर प्रकार से लक्ष्मण का भला करेंगे, उन्हें सुख देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। इसी विश्वास का संकेत 'सब बिधि सुखद परम हित जानी' में है। इसलिए लक्ष्मण की मूर्च्छा पर राम को उस भरोसे की याद आती है और वे माता को उत्तर देने की चिंता से व्याकुल हो उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष माता सुमित्रा ने राम को लक्ष्मण का परम हितैषी और हर प्रकार से सुख देने वाला मानकर, उनके संरक्षण पर विश्वास करते हुए लक्ष्मण को उनके साथ भेजा था।

त्वरित सुझाव: 'किसने' का उत्तर सुमित्रा है और 'किस विश्वास से' का उत्तर राम का हितैषी तथा सुखद संरक्षक होना है।

7(ग). राम को अयोध्या लौटने पर किस स्थिति का सामना करना पड़ सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न राम की आशंका के विषय में है; इसे काव्यांश की परिस्थिति के अनुसार व्यक्त करना चाहिए।
- 'उतरु काह दैहउँ तेहि जाई' में माता सुमित्रा के सामने उत्तर देने की चिंता व्यक्त हुई है।

चरण 1: अयोध्या की संभावित स्थिति राम को आशंका है कि यदि लक्ष्मण को कुछ हो गया तो अयोध्या लौटकर उन्हें माता सुमित्रा का सामना करना पड़ेगा। सुमित्रा ने लक्ष्मण को राम का संरक्षण सुरक्षित समझकर उनके साथ भेजा था। इसलिए लक्ष्मण के बिना लौटने की कल्पना ही राम को असह्य लग रही है।

चरण 2: उत्तर देने की कठिनाई माता अपने पुत्र के बारे में पूछेंगी तो राम क्या कहेंगे, यही उनकी मुख्य चिंता है। वे जानते हैं कि लक्ष्मण माता के प्राणों के आधार हैं और उनके वियोग से माता को अत्यंत दुःख होगा। राम को उस शोक का सामना करने के साथ अपने ऊपर किए गए विश्वास का उत्तर भी देना होगा। इसी असमंजस में वे लक्ष्मण से उठकर यह बताने की विनती करते हैं कि माता को क्या उत्तर दिया जाए।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण के बिना लौटने पर राम को शोकाकुल माता सुमित्रा का सामना करना पड़ सकता है। उनके पुत्र की दशा के विषय में क्या उत्तर दें, यही सोचकर राम व्याकुल हैं।

त्वरित सुझाव: संभावना को संभावना की तरह लिखें; उत्तर का केंद्र सुमित्रा का प्रश्न और राम की उत्तर देने की असमर्थता रखें।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

निज जननी के एक कुमारा ।

तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्तियों का आशय संबोधन और पारिवारिक संबंध के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- राम का शोक लक्ष्मण के प्रति स्नेह और सुमित्रा के प्रति उत्तरदायित्व से जुड़ा है।

चरण 1: प्रत्यक्ष अर्थ राम लक्ष्मण से कहते हैं कि हे तात! तुम अपनी माता के अनन्य पुत्र और उनके प्राणों के आधार हो। तुम्हारे सहारे ही उनका जीवन और उनकी सारी आशाएँ टिकी हैं। यहाँ पुत्र को माता का जीवनाधार बताकर माँ और पुत्र के अत्यंत गहरे भावनात्मक संबंध को व्यक्त किया गया है।

चरण 2: निहित भाव लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम को माता सुमित्रा की चिंता सताती है। उन्होंने अपने प्रिय पुत्र को राम का परम हितैषी जानकर उनके हाथ सौंपा था। इसलिए राम केवल भाई के संकट से दुखी नहीं हैं; उन्हें यह भी पीड़ा है कि लक्ष्मण के बिना माता कैसे जिएँगी और वे उन्हें क्या उत्तर देंगे। इन पंक्तियों में राम की करुणा, भ्रातृप्रेम और दायित्वबोध प्रकट होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण माता सुमित्रा के प्राणाधार हैं; उनकी संभावित मृत्यु से माता पर आने वाले दुख की कल्पना राम के विलाप को और गहरा करती है।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ बताने के बाद माता के प्रेम और राम के उत्तरदायित्व से आशय जोड़िए।

अथवा

7. सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण-ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है । [8 अंक]

7(क). जिसे कवि ने 'सहर्ष स्वीकारा' था उसे ही क्यों भूल जाना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रिय के प्रभाव की गहनता और उससे मुक्ति की आकांक्षा साथ उपस्थित हैं।
- उत्तर में स्वीकार से विस्मृति की इच्छा तक हुए भावपरिवर्तन को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: स्वीकार और प्रभाव कवि ने प्रिय से प्राप्त अनुभवों और जीवन की स्थितियों को प्रसन्नतापूर्वक अपनाया था। प्रिय का स्नेह और प्रभाव उसके जीवन में इतना व्यापक हो गया कि वह स्वयं को उसी से घिरा और ढका हुआ अनुभव करता है। काव्यांश में इसके लिए परिवेष्टित आच्छादित शब्द आए हैं।

चरण 2: भूलने की आकांक्षा अब प्रिय की स्मृतियों और आत्मीयता का यह निरंतर घेरा कवि के लिए असह्य हो उठा है। रमणीय यह उजेला अब सहा नहीं जाता में इसी अति का संकेत है। वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व को अनुभव करना और इस अत्यधिक निर्भरता से मुक्त होना चाहता है। इसलिए प्रिय को भूल जाने का कठोर दंड भी माँगता है। यह साधारण घृणा नहीं, प्रेम की गहनता से उत्पन्न व्याकुलता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिय का प्रभाव सर्वव्यापी होकर कवि के लिए असह्य बन गया है; उससे मुक्ति और अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए वह विस्मृति चाहता है।

त्वरित सुझाव: विस्मृति की इच्छा समझाते समय परिवेष्टित आच्छादित और सहा नहीं जाता को जोड़िए।

7(ख). कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को 'अमावस्या' कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अमावस्या का बिंब यहाँ बाहरी तिथि से अधिक अंतर्मन की अंधकारमय स्थिति व्यक्त करता है।
- उजाले और अंधकार के विरोध से प्रिय की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति का अर्थ खुलता है।

चरण 1: व्यक्तिगत स्थिति की पहचान कवि के व्यक्तिगत संदर्भ में अमावस्या प्रिय को पूरी तरह भूल जाने और उसके स्नेहपूर्ण प्रभाव से वंचित हो जाने की स्थिति है। प्रिय से घिरे रहने को वह रमणीय उजेला कहता है; उसके मिटने पर जीवन में उसी अनुपात में घना भावात्मक अंधकार छा जाएगा।

चरण 2: बिंब की तीव्रता दक्षिण-ध्रुवी अंधकार-अमावस्या कहकर कवि इस विस्मृति को अत्यंत गहरा और व्यापक बनाता है। वह चाहता है कि यह अंधकार उसके शरीर, चेहरे और अंतर्मन तक फैल जाए। इस प्रकार अमावस्या केवल उदासी का नाम नहीं, प्रिय की स्मृतियों और आश्रय के अभाव की संपूर्ण अनुभूति है, जिसे वह दंड के रूप में स्वीकारने को तैयार है।

चरण 3: निष्कर्ष अमावस्या प्रिय की स्मृतियों और स्नेह के उजाले से रहित, गहरे अकेलेपन और अंतर्मन के अंधकार की स्थिति है।

त्वरित सुझाव: अमावस्या का अर्थ केवल दुख न लिखें; उसे प्रिय की स्मृति और स्नेह के अभाव से स्पष्ट करें।

7(ग). 'मैं तुम्हें भूल जाना चाहता हूँ' — यह कहने के लिए कवि ने क्या युक्ति अपनाई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि सीधे कथन के स्थान पर दंड की याचना द्वारा अपनी विस्मृति की इच्छा व्यक्त करता है।
- पुनरावृत्ति और अंधकार का बिंब भाव की व्याकुलता तथा तीव्रता बढ़ाते हैं।

चरण 1: दंड माँगने की युक्ति कवि ने सीधे मैं तुम्हें भूल जाना चाहता हूँ कहने के स्थान पर प्रिय से स्वयं को दंड देने की प्रार्थना की है। वह कहता है कि उसे ऐसा दंड मिले जिससे वह प्रिय को भूल जाए। इस युक्ति से उसकी इच्छा एक कठोर आत्मपीड़न की आकांक्षा बनकर सामने आती है।

चरण 2: अभिव्यक्ति का प्रभाव भूलूँ मैं भूलूँ मैं की पुनरावृत्ति उसकी व्याकुलता और दृढ़ आग्रह को प्रकट करती है। वह विस्मृति को दक्षिण ध्रुव के घने अंधकार जैसी अमावस्या के रूप में कल्पित करता है तथा उसमें शरीर और अंतर्मन तक डूबना चाहता है। इस प्रकार दंड की प्रार्थना, पुनरावृत्ति और अंधकार-बिंब मिलकर प्रिय को भूलने की इच्छा को अधिक मार्मिक और तीव्र बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने प्रिय से विस्मृति का कठोर दंड माँगने की युक्ति अपनाई है; पुनरावृत्ति और अंधकार-बिंब उसके आग्रह को तीव्र करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले दंड माँगने की मूल युक्ति बताइए, फिर पुनरावृत्ति और अंधकार-बिंब का प्रभाव जोड़िए।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

'यह उजेला अब सहा नहीं जाता है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उजेला प्रिय के स्नेह, स्मृति और व्यापक आत्मीय प्रभाव का प्रतीक है।
- आशय में रमणीय होने पर भी असह्य लगने की भावस्थिति समझानी चाहिए।

चरण 1: उजेले का अर्थ यह उजेला प्रिय के प्रेम, स्मृतियों और आत्मीय प्रभाव का उजाला है। कवि का जीवन इसी से घिरा हुआ है। प्रिय की उपस्थिति उसके अनुभवों और अंतर्मन में इतनी गहराई से बस गई है कि वह स्वयं को उससे पूरी तरह ढका हुआ महसूस करता है।

चरण 2: असह्य होने का कारण यह स्नेहपूर्ण उजाला सुंदर और सुखद होते हुए भी अपनी अत्यधिक व्यापकता के कारण अब कवि पर भारी पड़ता है। वह उसके घेरे से बाहर अपने स्वतंत्र अस्तित्व का अनुभव करना चाहता है। इसलिए प्रिय को भूलने और विस्मृति का घना अंधकार सहने का दंड माँगता है। पंक्ति प्रेम के अभाव को नहीं, प्रेम की ऐसी तीव्रता को व्यक्त करती है जो कवि को व्याकुल और परवश बना रही है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिय का सर्वव्यापी स्नेह और स्मृति कवि को इतना आच्छादित कर चुके हैं कि वह उससे मुक्त होने के लिए विस्मृति का दंड चाहता है।

त्वरित सुझाव: उजेले को सूर्यप्रकाश न मानें; प्रिय की स्मृति और उसके सर्वव्यापी प्रभाव का प्रतीक समझें।

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ ।
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।
और ...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है ।

निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). कविता के किन उपमानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का चित्रवत् वर्णन है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि परिचित घरेलू उपमानों के सहारे आकाश के बदलते रंगों का चित्र बनाता है।
- ग्रामीण परिवेश का संकेत वस्तुओं और उनके दैनिक उपयोग से पहचाना जाता है।

चरण 1: ग्रामीण उपमानों की पहचान राख से लीपा हुआ चौका और बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो गाँव के घरेलू जीवन से जुड़े प्रमुख उपमान हैं। गीला चौका ग्रामीण रसोई की स्वच्छता और ताजगी का दृश्य सामने लाता है। काली सिल और उस पर केसर की लाली प्रातःकालीन आकाश के गहरे रंग में उभरते लालिमा के स्पर्श को साकार करते हैं।

चरण 2: चित्रात्मकता का प्रभाव कवि दूर के आकाश को घर की जानी-पहचानी वस्तुओं के माध्यम से देखने योग्य बनाता है। राख की धूसरता, गीले चौके की नमी और काली सिल पर लाल केसर के रंग से भोर की अनेक रंगछवियाँ उभरती हैं। इस प्रकार ग्रामीण दैनिक जीवन की वस्तुएँ सुबह के रंग और ताजगी को मूर्त करती हैं; पाठक को गाँव की सुबह का सजीव चित्र दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष राख से लीपा गीला चौका और लाल केसर से धुली काली सिल जैसे ग्रामीण घरेलू उपमान उषा को गाँव की सुबह का चित्र बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: गाँव से संबंध दिखाने के लिए चौका और सिल चुनें तथा उनके रंगों को आकाश से जोड़ें।

8(ख). कविता में प्रयुक्त किसी एक अलंकार का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा अलंकार में उपमेय की तुलना समान गुण वाले उपमान से की जाती है।
- अलंकार का सौंदर्य बताने में उसकी पहचान के साथ दृश्य पर पड़ा प्रभाव स्पष्ट करें।

चरण 1: उपमा की पहचान प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे में उपमा अलंकार है। यहाँ प्रातःकालीन आकाश उपमेय, नीला शंख उपमान तथा जैसे समानता प्रकट करने वाला शब्द है। दोनों की समानता गहरे नीले रंग, स्वच्छता और शांत सौंदर्य में है।

चरण 2: काव्य-सौंदर्य शंख जैसे ठोस और परिचित उपमान से आकाश का रंग मूर्त हो जाता है। केवल आकाश को नीला कहने के स्थान पर शंख से तुलना करने पर उसकी निर्मल चमक और सघन नीलिमा पाठक के सामने चित्र के रूप में आती है। इससे भोर का शांत, आकर्षक और ताजगी भरा वातावरण उभरता है। यह उपमा कविता के आरंभ में ही उषा के रंगमय सौंदर्य का सजीव अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष नीले शंख से प्रातःकालीन आकाश की तुलना में उपमा अलंकार है; इससे भोर की सघन नीलिमा और निर्मल सौंदर्य मूर्त होता है।

त्वरित सुझाव: एक ही अलंकार का उदाहरण, उसके घटक और उससे बने दृश्य का प्रभाव स्पष्ट लिखिए।

8(ग). उषा का जादू क्या था ? वह कैसे टूट रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा का जादू भोर में आकाश के बदलते रंगों और रहस्यमय सौंदर्य का आकर्षण है।
- कविता के अंतिम कथन से इस सौंदर्य के बदलने का कारण निर्धारित होता है।

चरण 1: उषा के जादू का स्वरूप सूर्योदय से पहले आकाश की नीलिमा, धूसरता और लालिमा लगातार बदलती दिखाई देती हैं। कभी वह नीला शंख लगता है, कभी राख से लीपा गीला चौका और कभी केसर से धुली काली सिल। नील जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब भी इसी आकर्षक सौंदर्य को बढ़ाता है। रंगों और आकृतियों की यह अद्भुत, क्षण-क्षण बदलती छटा ही उषा का जादू है।

चरण 2: जादू के टूटने का कारण सूर्य के उदय के साथ प्रकाश बढ़ने लगता है और आकाश की वे सूक्ष्म, रहस्यपूर्ण रंगछवियाँ बदल जाती हैं। भोर का सम्मोहक वातावरण स्पष्ट दिन के प्रकाश में रूपांतरित होने लगता है। इसलिए कवि कहता है कि उषा का जादू टूट रहा है। यह परिवर्तन कविता की अंतिम पंक्ति सूर्योदय हो रहा है से स्पष्ट हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भोर की बदलती रंगछवियों का सम्मोहन उषा का जादू है; सूर्योदय और बढ़ते प्रकाश से यह सम्मोहन टूटता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखें: पहले भोर की रंगछटा, फिर सूर्योदय से उसमें होने वाला परिवर्तन।

अथवा

8. रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं ।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल !
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर ! [6 अंक]

8(क). धनिकों और कृषकों के लिए प्रयुक्त विशेषणों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण पात्रों की दशा स्पष्ट करते हैं और धनी तथा कृषक के जीवन का विरोध उभारते हैं।

- काव्यांश में भयग्रस्त धनिक और शोषण से जर्जर किसान की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ बादल के क्रांतिकारी अर्थ को स्पष्ट करती हैं।

चरण 1: धनिकों की दशा धनिकों के लिए प्रयुक्त 'क्षुब्ध' और 'त्रस्त' जैसे शब्द उनकी व्याकुलता तथा भय को मूर्त करते हैं। धन का भंडार सुरक्षित होने और प्रियजनों के समीप रहने पर भी वे आतंक से काँप रहे हैं। बादल का वज्र जैसा गर्जन उन्हें अपने वैभव पर संकट का संकेत लगता है। इस प्रकार बाहरी सम्पन्नता के भीतर छिपी असुरक्षा उभरती है।

चरण 2: कृषक की दशा और विरोध कृषक की बाहुओं के लिए 'जीर्ण', शरीर के लिए 'शीर्ण' तथा स्वयं कृषक के लिए 'अधीर' विशेषण आए हैं। पहले दो शब्द कठोर श्रम, अभाव और शोषण से हुई शारीरिक दुर्दशा दिखाते हैं; 'अधीर' परिवर्तन की बेचैन प्रतीक्षा बताता है। जिस बादल से धनी भयभीत है, उसी को किसान बुलाता है। इस विरोध से सामाजिक विषमता और परिवर्तन की आवश्यकता प्रभावपूर्ण बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष ये विशेषण धनिकों का आतंक और कृषक की दीनता तथा आशाभरी व्यग्रता साकार करके काव्यांश को मार्मिक बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: विशेषण का केवल अर्थ न लिखें; उससे उभरती दशा और धनी-किसान का विरोध भी जोड़ें।

8(ख). 'विप्लव के वीर' शब्द के सौन्दर्य को उद्घाटित कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में दृश्य वस्तु के माध्यम से व्यापक सामाजिक भाव व्यक्त होता है।
- 'विप्लव' आमूल परिवर्तन और 'वीर' उस परिवर्तन को सम्भव बनाने वाली साहसी शक्ति का बोध कराता है।

चरण 1: संबोधन का आशय कवि बादल को 'विप्लव के वीर' कहकर पुकारता है। बादल का प्रचंड गर्जन यहाँ सामाजिक क्रांति की आवाज बन जाता है। उसका स्वर शोषण पर आधारित व्यवस्था को चुनौती देता है। इसलिए वह केवल वर्षा लाने वाला प्राकृतिक बादल नहीं रहता, बल्कि अन्याय मिटाने की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक बनता है।

चरण 2: सामाजिक और काव्यात्मक सौंदर्य इस संबोधन का सौंदर्य धनिक और कृषक की भिन्न प्रतिक्रियाओं से खुलता है। धनिक गर्जन से डरकर मुख ढाँपते हैं, जबकि जीर्ण-शीर्ण किसान उसे अधीर होकर बुलाता है। किसान के लिए परिवर्तन मुक्ति और नए जीवन की आशा है। बादल को साहसी योद्धा का रूप देने से मानवीकरण होता है तथा पंक्तियों में ओज और संघर्ष का उत्साह आता है। 'विप्लव' और 'वीर' की आवृत्त 'व' ध्वनि संबोधन को प्रभावशाली बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष 'विप्लव के वीर' में बादल अन्यायपूर्ण व्यवस्था बदलकर पीड़ित कृषक को आशा देने वाले साहसी क्रांतिकारी का रूप ग्रहण करता है।

त्वरित सुझाव: इस संबोधन को धनी के भय और किसान के स्वागत से जोड़कर उसका प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट करें।

8(ग). इस काव्यांश की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक विशेषताओं में शब्द-चयन, ध्वनि, चित्रात्मकता और कथ्य के अनुकूल अभिव्यक्ति देखी जाती है।
- प्रस्तुत अंश में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली और ओजपूर्ण संबोधन क्रांति तथा सामाजिक विषमता के भाव व्यक्त करते हैं।

चरण 1: शब्दावली और चित्रात्मकता इस अंश की भाषा संस्कृतनिष्ठ, सघन और ओजपूर्ण खड़ी बोली है। 'रुद्ध', 'क्षुब्ध', 'वज्र', 'त्रस्त', 'जीर्ण', 'शीर्ण' तथा 'विप्लव' जैसे शब्द भावों की तीव्रता बढ़ाते हैं। 'नयन-मुख ढाँप रहे हैं' से भयभीत धनिकों का और 'जीर्ण बाहु' तथा

'शीर्ण शरीर' से दुर्बल किसान का स्पष्ट चित्र उभरता है। कम शब्दों में दोनों वर्गों की दशा व्यक्त हुई है।

चरण 2: ध्वनि, लय और प्रतीक 'विप्लव के वीर' में 'व' वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य देती है। 'कोष-तोष' और 'शरीर-अधीर-वीर' का ध्वनि-साम्य लय को प्रभावी बनाता है। बादल को सीधे संबोधित करने और उसे 'वीर' कहने से मानवीकरण होता है। बादल क्रांति का प्रतीक है; धनी का भय और कृषक की आतुरता भाषा में विरोध की तीव्रता भरते हैं। छोटे, आवेगपूर्ण पद अभिव्यक्ति को ऊर्जस्वी बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की संस्कृतनिष्ठ, चित्रात्मक और लयपूर्ण भाषा अलंकार तथा प्रतीक के सहारे सामाजिक संघर्ष को प्रभावी अभिव्यक्ति देती है।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ काव्यांश का छोटा उदाहरण और उसका प्रभाव अवश्य लिखें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर 'भाषा को सहूलियत' से बरतने के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बात सीधी थी पर' में कुँवर नारायण कथ्य को कृत्रिम भाषा में उलझाने की समस्या दिखाते हैं।
- 'सहूलियत' से भाषा बरतना भाव के अनुकूल सरल, सहज और संप्रेषणीय अभिव्यक्ति चुनना है।

चरण 1: अभिप्राय स्पष्ट करना भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है कि लेखक भाषा पर अनावश्यक जोर न डाले और अपनी सीधी बात को स्वाभाविक ढंग से व्यक्त करे। शब्द भाव को पाठक तक पहुँचाने के साधन हैं। उन्हें केवल कठिन, आकर्षक या चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए जोड़ने से मूल आशय अस्पष्ट हो सकता है। सहजता का अर्थ विचार को हल्का करना नहीं, बल्कि उसे स्पष्ट और प्रभावी रूप में कहना है।

चरण 2: कविता के प्रसंग से पुष्टि कविता में सीधी बात भाषा के चक्कर में टेढ़ी फँस जाती है। कवि उसे पाने के प्रयास में भाषा को बार-बार बदलता और उलटता-पलटता है। परिणाम यह होता है कि बात पकड़ में आने के बजाय और उलझती जाती है। पेंच और चूड़ियों का बिंब बताता है कि अति बल प्रयोग से अभिव्यक्ति की पकड़ ही नष्ट हो सकती है। इससे स्पष्ट है कि शब्दों पर आग्रह करने से कथ्य का स्वाभाविक रूप बिगड़ जाता है।

चरण 3: रचनाकार के लिए संदेश लेखक को अपने भाव के अनुरूप शब्द, वाक्य और लय चुननी चाहिए। भाषा की बनावट तभी सार्थक है जब वह बात खोलती हो। अनावश्यक शब्दाडंबर, जबरन गढ़ी गई जटिलता और केवल सजावट की इच्छा से बचकर ही कथ्य की मूल सच्चाई बचती है।

चरण 4: निष्कर्ष भाषा को सहूलियत से बरतना उसे भाव की सहज सहचरी बनाना है, जिससे सीधी बात स्पष्टता, स्वाभाविकता और प्रभाव के साथ पाठक तक पहुँचे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सहज भाषा का अर्थ बताकर कविता के भाषा-उलझाव और पेंच के बिंब से पुष्टि करें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बेकारी की समस्या तुलसी के ज़माने में भी थी, उस बेकारी का वर्णन तुलसी के कवित्त के आधार पर कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली तत्कालीन समाज की आजीविका-विहीनता और भूख का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है।

- कवित्त में अलग-अलग पेशों के उदाहरण व्यापक आर्थिक संकट को सामने लाते हैं।

चरण 1: विभिन्न वर्गों की बेकारी तुलसीदास बताते हैं कि किसान को खेती से जीविका नहीं मिल रही, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार नहीं चलता और सेवक को नौकरी नहीं मिलती। 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख' में सामान्य जीवन के अनेक साधनों का ठहर जाना व्यक्त है। बेकारी किसी एक पेशे की समस्या न होकर पूरे समाज का संकट बन गई थी। मेहनत करने की इच्छा रखने वाले लोग भी निर्वाह का रास्ता नहीं पा रहे थे।

चरण 2: असहायता और भूख आजीविका से वंचित लोग चिंता में डूबे हैं और एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ तथा क्या करें। संकट की व्यापकता के कारण कोई दूसरे को सहारा देने की स्थिति में भी नहीं है। पेट की आग मनुष्य को विवश करती है; कवित्त में ऊँचे-नीचे कर्म करने और धर्म-अधर्म का विचार भूलने तक की स्थिति सामने आती है। भूख इतनी विकराल है कि माता-पिता संतान तक बेचने को मजबूर होते हैं।

चरण 3: कवि की संवेदना तुलसी इस दुर्दशा को केवल आर्थिक सूचना की तरह नहीं रखते। वे दीन लोगों के दुख और असुरक्षा को करुण स्वर देते हैं। विविध व्यवसायों तथा भूख की विवशता के उल्लेख से उस युग की सामाजिक विषमता और सामान्य जन का जीवन-संघर्ष उभरता है।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसी के कवित्त में खेती, व्यापार और नौकरी का संकट, निराश्रय लोगों की चिंता तथा भूख से उत्पन्न विवशता तत्कालीन व्यापक बेकारी को उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक के उदाहरण लिखकर बेकारी का प्रभाव भूख और असहायता से जोड़ें।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पाठ्य-पुस्तक में संकलित फ़िराक़ गोरखपुरी की ग़ज़ल का केन्द्रीय भाव लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ग़ज़ल में प्रेम, विरह, स्मृति और सौंदर्य के अनुभव अलग-अलग शेरों में व्यक्त होते हैं।
- फ़िराक़ की संकलित ग़ज़ल प्रेम की संवेदना के साथ अभिव्यक्ति की विशिष्टता का बोध भी कराती है।

चरण 1: प्रेम और विरह की अनुभूति फ़िराक़ गोरखपुरी की ग़ज़ल का केंद्रीय भाव प्रेम और उसके वियोग की गहरी अनुभूति है। प्रेमी अपने दुःख को पूरी तरह छिपा नहीं पाता; वह दुनिया का खयाल और प्रिय के दुःख की मर्यादा रखते हुए सबसे छिपकर रोता है। प्रिय की स्मृति उसे निरंतर घेरे रहती है। आत्मविस्मरण और समर्पण के द्वारा ही प्रेम की पूर्णता मिलती है। इस तरह प्रेम जीवन के भीतर लगातार उपस्थित रहने वाला भाव बनता है।

चरण 2: सौंदर्य और संवेदनशील मन प्रकृति तथा प्रिय का सौंदर्य प्रेमी के मन में अनुभूतियों का विस्तार करता है। खिलती कलियों, रंग-सुगंध, तारों और रात के सन्नाटे के बिंब बाहरी दृश्य के साथ भीतर के भाव जोड़ते हैं। प्रेम केवल सुखद मिलन नहीं, प्रतीक्षा, वेदना और स्मृति का सम्मिलित अनुभव है। विरह के बावजूद प्रिय से भावनात्मक संबंध टूटता नहीं; उसकी याद मन को प्रभावित करती रहती है।

चरण 3: शायर की अभिव्यक्ति का आत्मबोध अंतिम शेर में शायर अपनी ग़ज़लों में मीर की आवाज सुनाई देने की बात कहता है। यह मीर के प्रति सम्मान और उनकी मार्मिक प्रेमानुभूति की परंपरा से जुड़ाव व्यक्त करता है। प्रेम की पीड़ा, प्रकृति का आकर्षण और अभिव्यक्ति की आत्मीयता मिलकर ग़ज़ल का भाव-संसार रचते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस ग़ज़ल का केंद्र प्रेम, विरह और प्रिय की स्मृति है; फ़िराक़ इन परिचित अनुभवों को अपने विशिष्ट अंदाज़ में मार्मिक स्वर देते हैं।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव में प्रेम-विरह को मुख्य रखें और स्मृति, प्राकृतिक बिंब तथा विशिष्ट अभिव्यक्ति को सहायक बिंदु बनाएँ।

10. इस चिलकती धूप में इतना-इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन — धूप, वर्षा, आँधी, लू — अपने आप में सत्य नहीं हैं ? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्नि-दाह, लूट-पाट, ख़ून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है । अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था । क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है । शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है । गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था । मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ, तब-तब हूक उठती है — हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). अवधूत किसे कहते हैं ? शिरीष को अवधूत क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत वह मस्त, अनासक्त और स्वतंत्र स्वभाव का व्यक्ति है जो सुख-दुःख तथा बाहरी परिस्थितियों से विचलित हुए बिना अपनी सहजता बनाए रखता है।
- गद्यांश में शिरीष की सरसता, सहनशीलता और कोमलता को इसी अनासक्त जीवन-दृष्टि का प्रतीक बनाया गया है।

चरण 1: अवधूत का अर्थ अवधूत सांसारिक मोह और बाहरी हलचलों से ऊपर उठे हुए ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी मन का संतुलन और आनंद बनाए रखता है। उसकी मस्ती उदासीनता या निष्क्रियता नहीं, बल्कि भीतर की स्वतंत्रता और दृढ़ता की पहचान होती है।

चरण 2: शिरीष से संबंध चिलचिलाती धूप, वर्षा, आँधी और लू जैसी प्रतिकूल स्थितियाँ शिरीष की सरसता को नष्ट नहीं कर पातीं। वह वायुमंडल से रस खींचकर अपनी कोमलता बनाए रखता है और कठिनाइयों को सहने में कठोर भी रहता है। इसलिए लेखक ने उसे अवधूत कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष अवधूत अनासक्त, मस्त और अविचल व्यक्ति होता है। शिरीष बाहरी आघातों के बीच भी सरस, कोमल और सहनशील बना रहता है, इसलिए वह अवधूत का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ लिखकर शिरीष की धूप और लू में बनी रहने वाली सरसता से उसका संबंध स्पष्ट करें।

10(ख). कोमलता और कठोरता दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में कोमलता मानवीय संवेदना तथा कठोरता विपत्ति के सामने अडिग रहने की क्षमता का संकेत है।
- लेखक गांधीजी के व्यक्तित्व को शिरीष की भाँति इन दोनों गुणों का संतुलित रूप मानता है।

चरण 1: कोमलता का स्वरूप गांधीजी की कोमलता मनुष्यों के प्रति करुणा, प्रेम और अहिंसक भाव में प्रकट होती है। देश में मार-काट और हिंसा का बवंडर उठने पर भी उनके भीतर की मानवीय संवेदना समाप्त नहीं हुई। वे मनुष्य की पीड़ा से जुड़े रहे और हिंसा के बीच भी कोमल हृदय बनाए रख सके।

चरण 2: कठोरता का स्वरूप उनकी कठोरता निर्दयता नहीं, बल्कि अपने आदर्शों और आंतरिक संतुलन पर दृढ़ रहने का गुण है। अग्नि-दाह, लूट-पाट और रक्तपात जैसी भयावह परिस्थितियों में भी वे विचलित होकर मानवीय मूल्यों से पीछे नहीं हटे। इसी अर्थ में लेखक उन्हें एक साथ कोमल और कठोर कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष गांधीजी करुणा और अहिंसा के कारण कोमल थे तथा भीषण हिंसा के बीच अपने आदर्शों पर अडिग रहने के कारण कठोर थे। इन दोनों गुणों ने उनके व्यक्तित्व को विशेष बनाया।

त्वरित सुझाव: कोमलता को करुणा से और कठोरता को सिद्धांतों की दृढ़ता से जोड़ें; कठोरता का अर्थ क्रूरता न लिखें।

10(ग). वे कौन-सी वर्तमान परिस्थितियाँ हैं जिनके भीतर स्थिर रह सकने या न रह सकने का संदेह पैदा होने लगता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर गद्यांश में उल्लिखित बाहरी परिवर्तनों और सामाजिक उथल-पुथल से मिलता है।
- प्राकृतिक तथा मानवीय संकट मनुष्य की मानसिक स्थिरता और सहज संवेदना की परीक्षा लेते हैं।

चरण 1: प्राकृतिक प्रतिकूलताएँ लेखक धूप, वर्षा, आँधी और लू जैसे बाहरी परिवर्तनों का उल्लेख करता है। चिलचिलाती धूप तथा लू की तीव्रता के बीच शिरीष की सरसता देखकर उसे आश्चर्य होता है। ऐसी कठिन परिस्थितियाँ सामान्यतः जीवन की सहजता और संतुलन को प्रभावित करती हैं।

चरण 2: देश की हिंसक परिस्थितियाँ देश के ऊपर से मार-काट, अग्नि-दाह, लूट-पाट और रक्तपात का बवंडर गुजरने का उल्लेख है। इन घटनाओं से उत्पन्न भय, पीड़ा और अशांति को देखकर संदेह होता है कि कोई व्यक्ति इनके बीच अपना मन स्थिर कैसे रख सकता है। गांधीजी और शिरीष इसी कठिन स्थिरता के उदाहरण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष धूप, वर्षा, आँधी और लू जैसी प्राकृतिक प्रतिकूलताओं तथा देश में फैली मार-काट, आगजनी, लूट-पाट और रक्तपात जैसी हिंसक परिस्थितियों में स्थिर बने रहने का संदेह होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गद्यांश की प्राकृतिक और सामाजिक दोनों प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियाँ शामिल करें।

10(घ). 'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !' कथन से लेखक क्या प्रतिपादित करना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन में प्रयुक्त अवधूत गांधीजी का संकेत है, जिनकी तुलना शिरीष से की गई है।
- विस्मय और वेदना से भरा कथन गांधीजी जैसे संतुलित तथा संवेदनशील व्यक्तित्व की आवश्यकता प्रकट करता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ लेखक शिरीष को देखकर उस बूढ़े का स्मरण करता है जो देश की भीषण हिंसक परिस्थितियों में भी स्थिर रह सका था। गद्यांश में यह बूढ़ा गांधीजी हैं। शिरीष की कोमलता और कठोरता लेखक को गांधीजी के उसी व्यक्तित्व की याद दिलाती है।

चरण 2: लेखक का अभिप्राय लेखक गांधीजी के अभाव की पीड़ा व्यक्त करते हुए उनके जैसे अनासक्त और दृढ़ मनुष्य की आवश्यकता प्रतिपादित करता है। संकटों में करुणा बचाए रखना और हिंसा से विचलित हुए बिना आदर्शों पर डटे रहना दुर्लभ है। शिरीष में ये गुण देखकर उसे ऐसे व्यक्तित्व के चले जाने की तीव्र कसक होती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन द्वारा लेखक गांधीजी के निधन से उत्पन्न अभाव और वेदना व्यक्त करता है तथा संकटों में भी करुणा, अनासक्ति और दृढ़ता बनाए रखने वाले उनके जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता बताता है।

त्वरित सुझाव: अवधूत की पहचान गांधीजी के रूप में करें और कथन में व्यक्त अभाव, वेदना तथा आदर्श का उल्लेख करें।

अथवा

10. जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के लक्षण एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे दासता में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता । 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है । यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है । उदाहरणार्थ, जाति-प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं । [8 अंक]

10(क). लेखक के अनुसार जाति-प्रथा के समर्थक किन अधिकारों को देना मान सकते हैं और किन्हें नहीं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश स्वीकृत बुनियादी अधिकारों तथा रोकी जाने वाली व्यावसायिक स्वतंत्रता में अंतर करता है।
- जाति-प्रथा व्यक्ति की इच्छा के स्थान पर सामाजिक रूप से निर्धारित पेशे को प्राथमिकता देती है।

चरण 1: स्वीकार किए जाने वाले अधिकार लेखक के अनुसार जाति-प्रथा के समर्थक मनुष्य के जीवन, शारीरिक सुरक्षा और संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता स्वीकार कर सकते हैं। ये अधिकार मान लेने पर भी वे व्यक्ति को अपनी क्षमताओं के अनुसार जीवन का कार्य चुनने की पूरी छूट देने को तैयार नहीं होते।

चरण 2: अस्वीकार की जाने वाली स्वतंत्रता वे मनुष्य की क्षमताओं के स्वतंत्र और प्रभावशाली उपयोग की स्वतंत्रता देने में संकोच करते हैं, क्योंकि उसका व्यावहारिक अर्थ अपना व्यवसाय स्वयं चुनना होगा। जाति द्वारा तय पेशे के स्थान पर अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार काम चुनना उनकी व्यवस्था के अनुकूल नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा के समर्थक जीवन, शारीरिक सुरक्षा और संपत्ति के अधिकार स्वीकार कर सकते हैं, परंतु क्षमताओं के स्वतंत्र उपयोग तथा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देने को तैयार नहीं होते।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले स्वीकार्य तीन अधिकार लिखें, फिर व्यवसाय चुनने की रोकी गई स्वतंत्रता स्पष्ट करें।

10(ख). 'दासता' के दो लक्षण स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक दासता को केवल कानूनी पराधीनता तक सीमित नहीं मानता है।
- अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करना भी दासता है।

चरण 1: कानूनी पराधीनता दासता का एक लक्षण कानूनी रूप से दूसरे के अधीन होना है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर औपचारिक बंधन होता है और वह स्वतंत्र निर्णय लेने की स्थिति में नहीं रहता। लेखक इस प्रचलित अर्थ को स्वीकार करता है, लेकिन दासता की सीमा यहीं समाप्त नहीं करता।

चरण 2: सामाजिक विवशता दूसरा लक्षण यह है कि व्यक्ति दूसरों द्वारा निश्चित व्यवहार, कर्तव्यों या पेशे को अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनाने के लिए विवश हो। इस स्थिति में कानूनी बंधन होना आवश्यक नहीं है। जाति-प्रथा में अपनी रुचि के विपरीत पेशा अपनाने की बाध्यता ऐसी सामाजिक दासता का उदाहरण है।

चरण 3: निष्कर्ष दासता के दो लक्षण हैं: कानूनी पराधीनता और दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार, कर्तव्यों या पेशे को अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनाने की विवशता। दूसरा रूप कानूनी पराधीनता के बिना भी संभव है।

त्वरित सुझाव: दासता के कानूनी और सामाजिक दोनों रूप अलग-अलग लिखें तथा दूसरे रूप के साथ पेशे की विवशता जोड़ें।

10(ग). व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न दिए जाने पर लेखक ने क्या संभावना व्यक्त की है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता व्यक्ति की इच्छा और क्षमताओं के स्वतंत्र उपयोग से जुड़ी है।
- लेखक इस स्वतंत्रता के निषेध को दासता का रूप मानता है, भले ही कानूनी पराधीनता न हो।

चरण 1: स्वतंत्रता छिनने का परिणाम लेखक के अनुसार यदि व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती, तो उसे दासता में जकड़कर रखा जाता है। वह अपनी इच्छा और सामर्थ्य के अनुसार काम नहीं चुन पाता। उसके जीवन का कार्य कोई दूसरा व्यक्ति या सामाजिक व्यवस्था निर्धारित करती है।

चरण 2: संभावना का स्पष्टीकरण दासता केवल कानून द्वारा किसी का अधीन होना नहीं है। दूसरों द्वारा तय कर्तव्यों और पेशे को अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनाने की विवशता भी दासता है। इसलिए कानूनी रूप से स्वतंत्र दिखाई देने वाला व्यक्ति भी जाति द्वारा निर्धारित पेशे की बाध्यता के कारण वास्तव में पराधीन बना रह सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न मिलने पर व्यक्ति दासता में बँध जाता है। अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों द्वारा तय पेशा अपनाने की विवशता कानूनी पराधीनता के बिना भी उसे पराधीन बनाती है।

त्वरित सुझाव: व्यवसाय की स्वतंत्रता के अभाव को सीधे दासता से जोड़ें और इच्छा के विरुद्ध पेशे की बाध्यता समझाएँ।

10(घ). 'जाति-प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना' से अंबेडकर का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वर्ग का आशय ऐसे सामाजिक समूह से है जिसकी व्यवस्था व्यक्ति के कार्य और पेशे निर्धारित करती है।
- लेखक बाहरी कानूनी स्वतंत्रता के बावजूद बनी रहने वाली सामाजिक पराधीनता की ओर संकेत करता है।

चरण 1: कथन का आशय अंबेडकर का आशय ऐसे सामाजिक वर्गों के अस्तित्व से है जिनमें कुछ लोगों को अपनी पसंद के बजाय पहले से निर्धारित पेशा अपनाना पड़ता है। जाति-प्रथा में जन्म के आधार पर पेशा तय होने जैसी बाध्यता इसका उदाहरण है। व्यक्ति की निजी इच्छा उस व्यवस्था के सामने प्रभावहीन हो जाती है।

चरण 2: दासता से संबंध ऐसे वर्गों में लोगों पर कानूनी पराधीनता का बंधन होना आवश्यक नहीं है। फिर भी दूसरों द्वारा तय काम और कर्तव्यों को अपनी इच्छा के विरुद्ध निभाने के कारण वे व्यवहार में पराधीन रहते हैं। लेखक इस उदाहरण से स्पष्ट करता है कि सामाजिक व्यवस्था भी मनुष्य को दासता में रख सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष इसका आशय ऐसे बाध्यकारी सामाजिक वर्गों से है जिनमें व्यक्ति को अपनी इच्छा के विरुद्ध निर्धारित पेशा अपनाना पड़ता है। कानूनन स्वतंत्र होने पर भी यह स्थिति सामाजिक दासता होती है।

त्वरित सुझाव: यहाँ वर्ग का अर्थ केवल आर्थिक श्रेणी न लें; पेशा थोपने वाली व्यवस्था और उससे उत्पन्न पराधीनता स्पष्ट करें।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ग्रीष्म में कम पानी वाले दिनों में गाँव-गली में डोलती मेंढक-मंडली पर एक बालटी पानी उंड़ेलना जीजी के विचार से पानी का बीज बोना है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी लोकविश्वास और त्याग की भावना से इंदर सेना पर पानी डालने को वर्षा के लिए किया गया अर्पण मानती हैं।
- बीज बोने में थोड़ा अन्न छोड़कर भविष्य में अधिक अन्न पाने की आशा होती है; यही उपमा पानी के दान पर लागू है।

चरण 1: बीज बोने की उपमा समझना जीजी के अनुसार किसान अच्छी उपज के लिए अपने पास रखा कुछ अनाज धरती में बोता है। देखने में वह अनाज मिट्टी में डालकर नष्ट करना लगता है, पर वास्तव में उसी त्याग से अनेक गुना अन्न पैदा होता है। सारा बीज बचाकर रख लेने से नई फसल नहीं मिल सकती। इस प्रकार पाने की आशा से पहले कुछ देना आवश्यक है।

चरण 2: पानी के अर्पण से संबंध जोड़ना इसी तरह गरमी और सूखे में थोड़ा पानी बचा होने पर भी जीजी मेंढक-मंडली पर एक बालटी पानी डालती हैं। उनके विश्वास में यह इंद्र देवता के लिए किया गया अर्घ्य है। जैसे थोड़े बीज से भरपूर फसल होती है, वैसे ही इस छोटे अर्पण के बदले इंद्र बादलों से बहुत पानी बरसाएँगे। पानी की कमी के बीच किया गया दान त्याग की सच्ची कसौटी भी है; पर्याप्त वस्तु में से देना उतना बड़ा त्याग नहीं माना जाता। यह तर्क वैज्ञानिक कारण बताने के लिए नहीं, जीजी की आस्था और उदारता समझाने के लिए दिया गया है। अपने पास की दुर्लभ वस्तु दूसरों को देना उनके लिए प्रार्थना का सक्रिय रूप है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी की दृष्टि में बालटी भर पानी व्यर्थ बहाना नहीं, बल्कि त्यागपूर्वक पानी का बीज बोना है, जिससे भविष्य में भरपूर वर्षा मिलने की आशा जुड़ी है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले किसान के बीज का उदाहरण दें, फिर थोड़ा पानी अर्पित करके अधिक वर्षा पाने के विश्वास से उसकी तुलना करें।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गाँव में महामारी फैलने और अपने दोनों बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोलक की लय लुट्टन के जीवन-संघर्ष की प्रेरणा और विपत्ति के सामने न झुकने का प्रतीक है।
- महामारी से भयभीत ग्रामीणों को ढोल की आवाज़ साहस और जीवित रहने का संबल देती है।

चरण 1: ग्रामीणों की दशा और ढोलक का प्रभाव गाँव में महामारी फैलने से चारों ओर मृत्यु, शोक और सन्नाटा छा गया था। रात में रोगियों तथा उनके परिजनों का भय और निराशा बढ़ जाते थे। ऐसे समय लुट्टन की ढोलक की आवाज़ लोगों को यह अनुभव कराती थी कि इस अँधेरे में भी संघर्ष करने वाली चेतना जीवित है। उसकी लय मृत्यु के भय को चुनौती देती और निराश मन में कुछ साहस भरती थी।

चरण 2: निजी शोक से ऊपर उठकर संघर्ष करना लुट्टन के अपने दोनों बेटे भी महामारी की भेंट चढ़ गए, फिर भी उसने ढोल बजाना नहीं छोड़ा। ढोलक ने उसके पहलवानी के जीवन में विपरीत परिस्थिति से लड़ना सिखाया था। इसलिए इस गहरे दुःख में भी वही उसका सहारा बनी रही। वह अपने व्यक्तिगत शोक से ऊपर उठकर गाँव वालों के मनोबल को टूटने से बचाता रहा। ढोल बजाते रहना उसके जीवट, लोकहित की भावना और मृत्यु के सामने हार न मानने का परिचायक है। उसके लिए ढोलक केवल पेशे का उपकरण नहीं थी, बल्कि जीवन की प्रेरक आवाज़ थी। बेटों की मृत्यु के बाद भी उस आवाज़ का जारी रहना बताता है कि वह सामूहिक पीड़ा में दूसरों को सहारा देने का अपना दायित्व नहीं भूलता।

चरण 3: निष्कर्ष लुट्टन ढोल बजाता रहा क्योंकि उसकी लय स्वयं उसे दुःख सहने की शक्ति और महामारी से घिरे गाँव को भय तथा निराशा से लड़ने का हौसला देती थी।

त्वरित सुझाव: केवल मनोरंजन न लिखें; महामारी का भय, ग्रामीणों का मनोबल और पहलवान के संघर्षशील स्वभाव को आपस में जोड़ें।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों में निहित करुणा और हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्य-शास्त्र की परिधि में क्यों नहीं आता ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य साधारण मनुष्य की दयनीय दशा से जुड़ता है; दर्शक हँसते हुए उसके दुःख का अनुभव करते हैं।
- भारतीय परंपरागत सौंदर्य-दृष्टि में करुण और हास्य रस का ऐसा एक साथ घुलना स्वीकृत ढाँचे से अलग रहा है।

चरण 1: चार्ली की कला में दोनों भावों का मेल चार्ली की फिल्मों का सामान्य, अभावग्रस्त पात्र अपनी विवशताओं और असंगत परिस्थितियों से दर्शक को हँसाता है। किंतु उसके पीछे भूख, अपमान, अकेलापन और मनुष्य की असहायता भी दिखाई देती है। इसलिए हँसी दुःख को मिटाती नहीं; वह उसी दुःख के बीच पैदा होती है। दर्शक पात्र पर हँसते हुए उससे सहानुभूति भी रखता है और उसकी स्थिति में अपनी स्थिति पहचानता है।

चरण 2: भारतीय सौंदर्य-दृष्टि से अंतर स्पष्ट करना भारतीय परंपरागत कला और रस-विचार में करुणा तथा हास्य की भावभूमियाँ प्रायः अलग मानी गई हैं। अपने ही कष्ट, दुर्बलता या दयनीय दशा पर हँसने और दूसरों को भी हँसाने की वह स्वीकृति यहाँ प्रमुख नहीं रही, जो चार्ली की कला का आधार है। उसके यहाँ करुणा से हास्य और हास्य से करुणा उत्पन्न होती है; हँसी और आँसू एक ही अनुभव के पहलू बन जाते हैं। इसी अनोखे सामंजस्य को परंपरागत भारतीय सौंदर्यशास्त्र की परिचित सीमाओं में रखना कठिन है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली की करुणा-मिश्रित हँसी अपने दुःख पर भी हँस सकने की कला है। करुण और हास्य को अलग भावभूमियों में देखने वाली परंपरागत भारतीय सौंदर्य-दृष्टि में इसका सहज स्थान नहीं बनता।

त्वरित सुझाव: दोनों रसों की परिभाषा भर न दें; चार्ली में एक ही परिस्थिति से हँसी और सहानुभूति पैदा होने की बात स्पष्ट करें।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर ख़त्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया, ऐसा क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में राजनीतिक विभाजन के बावजूद दोनों ओर की साझा संस्कृति और मानवीय संवेदना बनी हुई है।
- नमक मातृभूमि की स्मृति और सीमाओं से परे अपनत्व का प्रतीक बनता है।

चरण 1: सीमा पर मिले साझा अपनत्व को पहचानना सफ़िया ने लाहौर की यात्रा में देखा कि राजनीतिक बँटवारा मनुष्यों की स्मृतियों और आत्मीय संबंधों को नहीं बाँट पाया है। लाहौर का नमक मँगाने वाली सिख बीबी के लिए लाहौर अब भी अपना वतन था। दूसरी ओर सीमा के कर्मचारियों की यादों में भी छूटे हुए घर और प्रदेश बसे थे। इस तरह दोनों देशों के लोगों के अनुभवों में बिछोह और पुराने स्थानों के प्रति प्रेम समान था।

चरण 2: अटारी के अनुभव का अर्थ बताना अटारी पहुँचने पर उसे वैसी ही बोली, आत्मीयता, व्यवहार और भावनाएँ मिलीं जैसी लाहौर में थीं। लोगों के मन में अपने पुराने वतन की याद तथा दूसरे के दुःख को समझने की क्षमता बनी हुई थी। नमक के साथ जुड़ा अपनापन सीमा पार भी बदल नहीं गया। इसलिए उसे लगा कि नक्शे और कानून की सीमा भले अलग हो, मनुष्यों की संस्कृति और संवेदना में कोई स्पष्ट टूटन नहीं है। यही अनुभव लाहौर के समाप्त होने और अमृतसर के आरंभ होने का अंतर धुँधला कर देता है। इस अनुभव में राजनीतिक सीमा की अपेक्षा मनुष्यों के हृदय का संबंध अधिक प्रबल होकर सामने आता है।

चरण 3: निष्कर्ष साझी भाषा-संस्कृति, वतन की याद और दोनों ओर मिले मानवीय अपनत्व के कारण सफ़िया को लाहौर और अमृतसर के बीच भावनात्मक विभाजन दिखाई नहीं दिया।

त्वरित सुझाव: सीमा का भौगोलिक वर्णन करने के बजाय वतन की स्मृति, साझा संस्कृति और नमक से जुड़े मानवीय संबंधों पर उत्तर केंद्रित करें।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने का क्या आशय है ? इसका मनुष्य पर क्या असर पड़ता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण आँखों के रास्ते मन पर असर डालकर अनावश्यक वस्तुओं की इच्छा जगाता है।
- ज़रूरत का विवेक बाज़ार के जादू से बचाता है; विवेक खोने पर खरीदी के बाद असंतोष पैदा होता है।

चरण 1: जादू चढ़ने का आशय और उसका असर बाज़ार की चमक-दमक, सजी हुई वस्तुओं और आकर्षक प्रदर्शन से मनुष्य का प्रभावित होकर अपनी वास्तविक ज़रूरत भूल जाना बाज़ार का जादू चढ़ना है। वस्तुएँ इतनी उपयोगी और मनभावन लगने लगती हैं कि सब कुछ खरीद लेने की इच्छा होती है। मन खाली हो और खरीद सकने के लिए धन हो तो आकर्षण अधिक प्रभाव डालता है। व्यक्ति ज़रूरत का विचार छोड़कर लोभ और दिखावे में पड़ सकता है तथा अनावश्यक सामान पर पैसा खर्च कर देता है।

चरण 2: जादू उतरने का आशय और उसका असर खरीदारी के बाद जब आकर्षण का नशा उतरता है, तब मनुष्य को मालूम होता है कि खरीदी हुई बहुत-सी चीज़ें उसके काम की नहीं हैं। वे सुख देने के स्थान पर घर में बोझ बनती हैं और व्यर्थ खर्च का खेद होता है। अधिक वस्तुएँ खरीदना भी मन की तृप्ति सुनिश्चित नहीं करता; उलटे अभाव और असंतोष बढ़ सकते हैं। लेखक इसलिए स्पष्ट आवश्यकता के साथ बाज़ार जाने पर बल देता है, जिससे आकर्षण के बीच भी उपयोगिता की पहचान बनी रहे।

चरण 3: निष्कर्ष जादू चढ़ना बाज़ार के आकर्षण में आवश्यकता का विवेक खोना और जादू उतरना अनावश्यक खरीदारी की निरर्थकता समझना है। इससे क्रमशः लोभ तथा बाद में पछतावा और असंतोष पैदा होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से बनाएँ: आकर्षण के समय अनावश्यक खरीदने की चाह और आकर्षण मिटने पर बोझ तथा पछतावा।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'डायरी के पन्ने' के आधार पर महिलाओं के बारे में ऐन के विचारों पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन स्त्री को पुरुष से हीन मानने का विरोध करती है।
- मातृत्व का सम्मान स्त्री को समान अधिकार और स्वतंत्र पहचान देने के साथ होना चाहिए।

चरण 1: स्त्री की क्षमता और सामाजिक स्थिति ऐन के अनुसार पुरुषों ने शारीरिक शक्ति और सामाजिक प्रभुत्व के कारण स्त्रियों को अपने अधीन रखा है। यह स्थिति उनकी योग्यता की कमी का प्रमाण नहीं है। शिक्षा, काम और अपनी क्षमताएँ विकसित करने का अवसर मिलने पर स्त्रियाँ भी बौद्धिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में अपनी शक्ति दिखा सकती हैं। इसलिए उन्हें केवल पुरुषों पर आश्रित मानना अनुचित है।

चरण 2: मातृत्व का योगदान और सम्मान ऐन माँ बनने वाली स्त्री के कष्ट, साहस और सृजनशीलता को विशेष महत्त्व देती है। संतान को जन्म देकर और उसका पालन करके स्त्रियाँ मानव-जीवन की निरंतरता बनाए रखती हैं, फिर भी उनके इस योगदान को प्रायः उचित सम्मान नहीं मिलता। ऐन चाहती है कि स्त्रियों के अनुभवों और त्याग को समझा जाए तथा समाज में उन्हें बराबरी का स्थान मिले। ऐन का यह भी विचार है कि समाज युद्ध करने वाले सैनिकों को सम्मान देता है, जबकि प्रसव के समय पीड़ा और जोखिम सहने वाली स्त्री के साहस की उपेक्षा करता है। इस तुलना से वह स्त्री के जीवनदायी योगदान का मूल्य पहचानने की माँग करती है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन के विचार स्त्री की गरिमा, क्षमता और समानता के पक्ष में हैं। वह मातृत्व के महत्त्व को स्वीकारते हुए स्त्रियों को स्वतंत्र व्यक्तित्व और उचित सामाजिक सम्मान देने की समर्थक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में समान अधिकार और मातृत्व के योगदान, दोनों पक्ष जोड़िए; केवल स्त्री के त्याग का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अपने घर में अपनी 'सिल्वर वैडिंग' के आयोजन में भी यशोधर बाबू को अनेक बातें 'समहाउ इंप्रॉपर' लग रही थीं । ऐसा क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की परंपरागत जीवन-दृष्टि और बच्चों की आधुनिक शैली में अंतर है।
- समारोह की घटनाओं के आधार पर उनकी असहजता का कारण स्पष्ट करना है।

चरण 1: आयोजन और जीवन-दृष्टि में अंतर यशोधर बाबू सादगी, मर्यादा और परंपरागत पारिवारिक व्यवहार को महत्त्व देते हैं। विवाह की वर्षगाँठ को पाश्चात्य ढंग से सिल्वर वैडिंग के रूप में मनाना उनके संस्कारों से मेल नहीं खाता। बच्चे अपनी रुचि के अनुसार पार्टी, सजावट और खान-पान की व्यवस्था करते हैं। अपने ही विवाह के समारोह में निर्णयों से दूर रहना उन्हें परिवार में बदलती अपनी स्थिति का अनुभव कराता है।

चरण 2: उपहार और आत्मीयता की उनकी अपेक्षा भूषण का ड्रेसिंग गाउन देना नई पीढ़ी की सुविधा और आधुनिकता की दृष्टि से अच्छा उपहार है, पर यशोधर बाबू उससे अपनेपन की वैसी अनुभूति नहीं पाते जिसकी उन्हें अपेक्षा है। उन्हें इस बात की कमी खटकती है कि बेटा सुबह स्वयं चाय बनाकर पिता को पिलाने की बात क्यों नहीं कहता। पत्नी और बच्चों का नई जीवन-शैली से सहज तालमेल भी उनकी असहजता बढ़ाता है। परिवार के लिए आर्थिक सफलता और आधुनिक सुविधाएँ महत्त्वपूर्ण हो गई हैं, जबकि वे संबंधों में सेवा और बुजुर्गों के प्रति आदर को अधिक महत्त्व देते हैं। इस अंतर के कारण उत्सव की चहल-पहल के बीच भी वे अपने को अलग-थलग अनुभव करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उन्हें अनेक बातें इसलिए अनुचित लगती हैं कि समारोह का आधुनिक आडंबर और बच्चों का व्यवहार उनके सादगीपूर्ण संस्कारों तथा आत्मीय पारिवारिक सेवा की अपेक्षा से मेल नहीं खाते।

त्वरित सुझाव: समारोह का ढंग और ड्रेसिंग गाउन वाला प्रसंग जोड़कर यशोधर बाबू की असहजता समझाइए।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'जूझ' शीर्षक को उपयुक्त ठहराने के लिए तीन तर्क दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ का अर्थ कठिन परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करना है।
- शीर्षक का समर्थन लेखक के शिक्षा, श्रम और रचनात्मक विकास के संघर्ष से होता है।

चरण 1: शिक्षा प्राप्त करने का संघर्ष लेखक आनंद के पिता उसे पढ़ाने के स्थान पर खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। पढ़ाई की तीव्र इच्छा होते हुए भी उसे पारिवारिक विरोध का सामना करना पड़ता है। देसाई-सरकार की सहायता से विद्यालय जाने की अनुमति जुटाना बताता है कि शिक्षा उसके लिए सहज अवसर नहीं, संघर्ष से प्राप्त उपलब्धि है।

चरण 2: श्रम और पढ़ाई में संतुलन विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी खेत का काम समाप्त नहीं होता। लेखक को खेती और घर के दायित्व निभाते हुए पढ़ने का समय निकालना पड़ता है। थकान और प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच शिक्षा के प्रति उसकी लगन बनी रहती है। यह बाहरी कठिनाइयों से निरंतर जूझने का दूसरा रूप है।

चरण 3: हीनता से उबरकर सृजन की ओर पढ़ाई में आए अंतराल और साथियों के व्यवहार से पैदा झिझक के बावजूद वह हार नहीं मानता। अध्यापकों के प्रोत्साहन से उसमें आत्मविश्वास बढ़ता है। कविता के प्रति रुचि और स्वयं रचना करने की कोशिश उसके भीतर की सृजनशीलता को विकसित करती है। वह अपने संकोच और सीमाओं से भी संघर्ष करता है। यही संघर्ष उसके व्यक्तित्व के निर्माण का आधार बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष पारिवारिक विरोध, श्रमपूर्ण जीवन और आत्मविकास की बाधाओं से लेखक का निरंतर संघर्ष कथा का केंद्र है। इसलिए जूझ शीर्षक पूरी तरह उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: तीन तर्क अलग रखिए: पढ़ने की अनुमति, खेत के साथ पढ़ाई और आत्मविश्वास तथा कविता का विकास।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

सिन्धु-सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना दर्शकों को अभिभूत क्यों करती है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नगर की व्यवस्था उस समय के नागरिक जीवन और तकनीकी समझ का प्रमाण है।
- उत्तर में सड़क, आवास तथा जल-निकास जैसी ठोस विशेषताएँ देनी हैं।

चरण 1: सड़कों और मकानों की सुव्यवस्था मुअनजो-दड़ो की सीधी सड़कों, एक-दूसरे को समकोण पर काटते मार्गों और योजनाबद्ध बस्तियों से दर्शक प्रभावित होते हैं। पकी ईंटों के मकान और उनमें स्नान तथा जल की व्यवस्था दिखाती है कि नगर आकस्मिक ढंग से नहीं बसा था। निर्माण में नागरिकों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया था।

चरण 2: स्वच्छता और सार्वजनिक व्यवस्था ढकी हुई नालियाँ, जल-निकास की सुविचारित व्यवस्था तथा विशाल सार्वजनिक स्नानागार उन्नत नागरिक समझ के प्रमाण हैं। इतने प्राचीन नगर में स्वच्छता, सुविधा और सामूहिक उपयोग के निर्माणों का यह विकास आश्चर्य उत्पन्न करता है। दर्शक इस प्राचीन सभ्यता की परिपक्वता और व्यवस्थित जीवन को देखकर अभिभूत होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो की योजनाबद्ध सड़कें, पक्के मकान, स्नानागार और विकसित जल-निकास व्यवस्था उसकी उन्नत नगर-योजना का परिचय देकर दर्शकों को अभिभूत करती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को केवल प्राचीनता तक सीमित न रखें; नगर-योजना की दो या तीन ठोस विशेषताएँ अवश्य लिखें।

13(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'जूझ' कहानी में देसाई-सरकार की भूमिका पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देसाई-सरकार लेखक की पढ़ने की आकांक्षा को समझते हैं।
- उनका प्रभाव लेखक के पिता का विरोध दूर करने में सहायक होता है।

चरण 1: लेखक की इच्छा को समर्थन देसाई-सरकार लेखक आनंद की शिक्षा के पक्ष में खड़े होते हैं। वे समझते हैं कि केवल खेती में लगा देने से उसकी पढ़ाई और प्रतिभा बाधित होगी। लेखक की इच्छा को गंभीरता से लेकर वे उसे विद्यालय लौटने का अवसर दिलाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार वे उसकी आकांक्षा और कठोर पारिवारिक परिस्थिति के बीच सहायक बनते हैं।

चरण 2: पिता को समझाकर मार्ग खोलना लेखक के पिता देसाई-सरकार का आदर करते हैं और उनकी बात का प्रभाव ग्रहण करते हैं। देसाई-सरकार पिता को समझाते हैं कि लड़के को पढ़ने देना चाहिए। उनके हस्तक्षेप से लेखक की शिक्षा में खड़ी बड़ी बाधा दूर होती है। यद्यपि लेखक को खेत के काम भी करने पड़ते हैं, उसे फिर विद्यालय जाने का महत्त्वपूर्ण अवसर मिल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष देसाई-सरकार सहृदय और शिक्षा-समर्थक व्यक्ति हैं। पिता को समझाकर वे लेखक की पढ़ाई पुनः आरंभ कराने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

त्वरित सुझाव: देसाई-सरकार को केवल प्रेरक न कहें; पिता पर उनके प्रभाव और उससे खुले शिक्षा के अवसर को भी बताइए।

13(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

ऐसी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जो सेक्शन आफ़ीसर वाई.डी. पंत को अपने रोल मॉडेल किशनदा से उत्तराधिकार में मिली थीं । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू किशनदा को आदर्श मानकर उनके व्यवहार को अपनाते हैं।
- प्रश्न में दो विशेषताओं का स्पष्ट उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: सामाजिक सहभागिता और सहायता किशनदा की तरह यशोधर बाबू भी अपने परिचितों और समाज से जुड़े रहना आवश्यक मानते हैं। लोगों के सुख-दुःख में जाना, संबंध निभाना और जरूरत पर सहायता करना उनके लिए जीवन-मूल्य हैं। उनकी यह सामाजिक आत्मीयता उस आदर्श से जुड़ी है जिसमें व्यक्ति केवल अपनी पत्नी और बच्चों तक सीमित नहीं रहता।

चरण 2: सादगी और सामूहिक आयोजन की रुचि किशनदा की सादगी तथा सामूहिक गतिविधियों की परंपरा भी यशोधर बाबू में दिखाई देती है। दफ्तर में मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ चलाना और होली जैसे अवसरों पर सामूहिक आयोजन करना इसी प्रभाव के उदाहरण हैं। वे दिखावे से अधिक मेल-जोल और परंपरा को महत्त्व देते हैं तथा पुराने ढंग की आत्मीयता बनाए रखना चाहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष किशनदा से उन्हें लोगों के सुख-दुःख में सहभागी होने की भावना तथा सादगी के साथ सामूहिक और सांस्कृतिक आयोजन करने की रुचि मिली थी।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ गिनाकर प्रत्येक के साथ व्यवहार का एक उदाहरण जोड़ें; केवल आदर्श मानने की बात न दोहराएँ।

14. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के स्वभाव की विशेषताओं को कहानी के ठोस प्रसंगों से प्रमाणित किया जाता है।
- यशोधर बाबू पर किशनदा के संस्कारों का गहरा प्रभाव है। उनके व्यक्तित्व में सादगी, परंपरानिष्ठा, कर्तव्यबोध और संवेदनशीलता एक साथ दिखाई देती हैं।

चरण 1: सादगी और आदर्शों के प्रति निष्ठा यशोधर बाबू दिखावे तथा उपभोक्तावादी जीवन से दूर रहने वाले व्यक्ति हैं। अपने वैवाहिक जीवन की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का भव्य आयोजन उन्हें सहज नहीं लगता। वे इसे परिवार के नए ढंग के उत्सव के रूप में देखते हैं, पर स्वयं उसके उत्साह में पूरी तरह शामिल नहीं हो पाते। किशनदा की सादी जीवन-पद्धति उनके लिए आदर्श बनी हुई है। इससे स्पष्ट है कि वे बाहरी चमक से अधिक जीवन-मूल्यों को महत्त्व देते हैं।

चरण 2: परंपरा और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से लगाव यशोधर बाबू अपने पहाड़ी परिवेश, पुरानी जीवन-शैली और सामुदायिक संस्कारों से जुड़े हुए हैं। उनकी दृष्टि में रिश्तों का निर्वाह और बड़ों के प्रति आदर आवश्यक है। परिवार के रहन-सहन तथा सोच में आए बदलाव उन्हें असहज करते हैं। पत्नी और बच्चों का आधुनिक जीवन उन्हें कई बार अपरिचित लगता है। इस प्रकार परंपराओं के प्रति उनका लगाव उनकी पहचान भी है और नई पीढ़ी से दूरी का कारण भी।

चरण 3: कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व वे नियमित नौकरी करने वाले, अनुशासनप्रिय और जिम्मेदार गृहस्थ हैं। परिवार के पालन-पोषण का दायित्व निभाने के साथ वे नाते-रिश्तेदारों से संबंध बनाए रखना भी अपना कर्तव्य समझते हैं। उनकी दृष्टि में जीवन केवल व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का नाम नहीं है। किशनदा जैसे पुराने परिचितों की स्मृति उनके जीवन में बनी रहती है। इससे उनकी संबंधों को निभाने वाली सामाजिक दृष्टि प्रकट होती है।

चरण 4: संवेदनशीलता और भीतर का अकेलापन यशोधर बाबू बाहर से संयमित दिखाई देते हैं, किंतु भीतर से अत्यंत भावुक हैं। बेटे भूषण द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन उन्हें इसलिए छूता है कि वे उससे बेटे के स्नेह की अपेक्षा जोड़ लेते हैं। वे चाहते हैं कि बेटा सुबह उन्हें

स्वयं चाय लाकर दे; उपहार से अधिक उन्हें आत्मीय व्यवहार की आवश्यकता है। बदलते परिवार में अपनी भावनाओं के लिए जगह न मिल पाने से वे अकेलापन अनुभव करते हैं। उनका बार-बार किशनदा को याद करना भी इसी मानसिक स्थिति को व्यक्त करता है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादे, परंपरानिष्ठ, कर्तव्यपरायण और संवेदनशील व्यक्ति हैं। कहानी उनके गुणों के साथ उनकी उस कठिनाई को भी उभारती है जिसमें पुराने संस्कारों वाला व्यक्ति बदलते पारिवारिक परिवेश से तालमेल नहीं बैठा पाता।

त्वरित सुझाव: चार विशेषताएँ अलग-अलग लिखकर प्रत्येक के साथ कहानी का एक प्रसंग जोड़ें; केवल विशेषणों की सूची देने से चरित्र-चित्रण पूरा नहीं होता।

अथवा

14. 'मुअनजो-दड़ो' के उत्खनन से प्राप्त जानकारियों के आधार पर सिन्धु-सभ्यता की विशेषताओं पर एक लेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष किसी सभ्यता के नगर-जीवन, तकनीकी ज्ञान, कलाबोध और सामाजिक व्यवस्था को समझने के प्रमाण होते हैं।
- लेख में मुअनजो-दड़ो के उत्खनन से प्राप्त ठोस जानकारियों के आधार पर सिंधु-सभ्यता की विशेषताओं का क्रमबद्ध विवेचन करना चाहिए।

चरण 1: लेख की रूपरेखा शीर्षक के बाद संक्षिप्त भूमिका में सभ्यता के विकसित स्वरूप का परिचय देंगे। मुख्य भाग में नगर-नियोजन, स्वच्छता, निर्माण-कौशल, आर्थिक जीवन तथा कला की चर्चा करेंगे। अंत में इन विशेषताओं से प्रकट नागरिक दृष्टि और सांस्कृतिक परिपक्वता को स्पष्ट करेंगे। उपलब्ध अवशेषों को आधार बनाएँगे; अज्ञात शासकों या अपठित लिपि के विषय में अप्रमाणित निष्कर्ष नहीं देंगे।

चरण 2: पूरा लेख **सिंधु-सभ्यता : विकसित नागरिक जीवन की पहचान**

मुअनजो-दड़ो के उत्खनन से प्रकट होता है कि सिंधु-सभ्यता अत्यंत विकसित नगर-सभ्यता थी। हजारों वर्ष पुराने खंडहर आज भी उसके निवासियों की व्यवस्थित जीवन-दृष्टि और निर्माण-कौशल का परिचय देते हैं। यह सभ्यता केवल विशाल इमारतों के कारण नहीं, सामान्य नागरिक की सुविधाओं के प्रति सजगता के कारण भी महत्त्वपूर्ण है।

नगर की सड़कों, गलियों और भवनों का सुविचारित विन्यास उसकी प्रमुख विशेषता है। पकी हुई ईंटों से बने मकान, आँगन, स्नान की व्यवस्था और कुएँ बताते हैं कि भवन-निर्माण में व्यावहारिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता था। नगर में जल-निकासी की सुव्यवस्थित व्यवस्था थी। ढकी हुई नालियाँ और घरों से निकलते पानी को बाहर पहुँचाने का प्रबंध स्वच्छता के प्रति सजगता का प्रमाण है।

विशाल सार्वजनिक स्नानागार इस सभ्यता की उल्लेखनीय उपलब्धि है। उसकी ईंटों की बनावट, जल को रोकने की व्यवस्था और आसपास के कक्ष उत्कृष्ट निर्माण-तकनीक तथा सामुदायिक जीवन की ओर संकेत करते हैं। अन्न के भंडारण से संबंधित अवशेष संगठित आर्थिक गतिविधियों का भी परिचय देते हैं।

उत्खनन में मिली मुहरें, मूर्तियाँ, आभूषण और मिट्टी के बर्तन वहाँ के लोगों की कलात्मक रुचि तथा शिल्प-कुशलता दिखाते हैं। नर्तकी की कांस्य प्रतिमा धातु-कला की उन्नति का प्रमाण है। पशु-आकृतियों वाली मुहरों में सूक्ष्म अंकन और सौंदर्यबोध दिखाई देता है। कृषि, शिल्प और व्यापार के सहारे विकसित जीवन का अनुमान इन वस्तुओं से लगाया जा सकता है। लिपि के चिह्न भी मिले हैं, किंतु उनका अर्थ अभी निश्चित रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।

इस सभ्यता में भव्य राजप्रासादों या युद्ध के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक व्यवस्था और जीवनोपयोगी निर्माण अधिक उभरते हैं। इससे एक संयमित, सुघड़ और परिपक्व संस्कृति का बोध होता है। मुअनजो-दड़ो का सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश यही है कि विकसित सभ्यता की पहचान सामान्य मनुष्य के सुव्यवस्थित और स्वच्छ जीवन में भी निहित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो के अवशेष नगर-नियोजन, स्वच्छता, उन्नत निर्माण-तकनीक, शिल्प और कलाबोध से संपन्न सिंधु-सभ्यता का परिचय देते हैं। उसका नागरिक जीवन उसकी विशिष्ट उपलब्धि था।

त्वरित सुझाव: हर विशेषता के साथ एक पुरातात्त्विक प्रमाण जोड़ें, जैसे स्वच्छता के साथ नालियाँ और निर्माण-कौशल के साथ सार्वजनिक स्नानागार।